चैत्र माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 74 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 09 अप्रैल 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

18+ आयु के लोगों को भी लगेगी एहतियाती खुराक

10 अप्रैल से 18 साल से ऊपर के लोगों के लिए कोरोना वायरस टीके की एहतियाती खुराक निजी टीकाकरण केंद्रों पर उपलब्ध होगी, मुफ्त टीकाकरण अभियान जारी रहेगा

नई दिल्ली: केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि 10 अप्रैल से 18 साल से ऊपर के लोगों के लिए कोरोना वायरस टीके की एहतियाती खुराक निजी टीकाकरण केंद्रों पर उपलब्ध होगी। मंत्रालय ने कहा कि जिन लोगों की आयु 18 साल से अधिक है और जिन्हें टीके की दूसरी खुराक लगे नौ महीने हो चुके हैं, वह निजी टीकाकरण केंद्रों पर एहतियाती खुराक के पात्र होंगे। इसके साथ ही मंत्रालय ने यह भी कहा कि पात्र आबादी के लिए टीके की पहली व दूसरी खुराक और स्वास्थ्य कर्मियों, अग्रमि मोर्चे को कर्मचारियों व 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए एहतियाती खुराक के लिए सरकारी टीकाकरण केंद्रों के जरिए चल रहा मुफ्त टीकाकरण अभियान इसी तरह जारी रहेगा और इसकी रफ्तार को भी और तेज किया जाएगा।

कोविन पोर्टल पर भी नया अपडेट: इससे पहले बताया गया था कि कोरोना वैक्सीन लगवा चुके लोग अपने कोविड-19 वैक्सीनेशन सर्टिफिकेट में हुई गलतियों को कोविन पोर्टल पर अब ठीक कर सकेंगे। स्वास्थ्य मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव विकास शील ने बताया था कि नए अपडेट में कोविन पोर्टल में एक ऐसी सुविधा दी जाएगी जिसके द्वारा टीकाकरण प्रमाणपत्रों पर नाम, जन्म वर्ष और लिंग में अनजाने में हुई त्रुटियों को सुधारा जा सकेगा।

टीकाकरण अभियान 16 जनवरी 2021 को शुरू हुआ था: देश भर में टीकाकरण अभियान 16 जनवरी, 2021 को शुरू किया गया था, जिसमें स्वास्थ्यकर्मियों को पहले चरण में टीका लगाया गया था। फ्रंटलाइन वर्कर्स का टीकाकरण पिछले साल 2 फरवरी से शुरू हुआ था। कोविड-19 टीकाकरण का अगला चरण पिछले साल 1 मार्च को 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों और 45 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों के लिए किसी रोग से पीडितों को टीके के साथ शुरू हुआ था। भारत ने पिछले साल 1 अप्रैल से 45 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों के लिए टीकाकरण शुरू किया। इसके बाद सरकार ने पिछले साल 1 मई से 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को वायरल बीमारी के खिलाफ टीकाकरण की अनुमति देकर अपने टीकाकरण अभियान का विस्तार करने का फैसला किया। टीकाकरण का अगला चरण इस साल 3 जनवरी से 15-18 वर्ष के आयु वर्ग के किशोरों के लिए शुरू हुआ है।

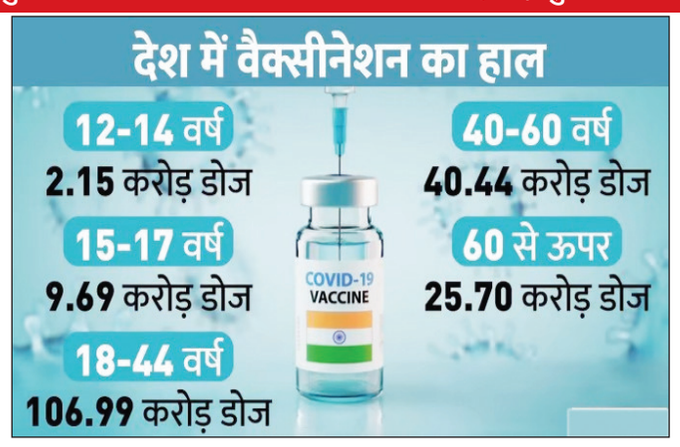

कोरोना से मुकाबला: मुफ्त नहीं मिलेगी कोविशील्ड की बूस्टर डोज

नई दिल्ली: सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के सीईओ अदार पूनावाला ने निजी टीकाकरण केंद्रों पर रविवार से सभी वयस्कों को कोरोना वायरस बूस्टर डोज की अनुमति देने के सरकार के फैसले का स्वागत किया। इसे एक महत्वपूर्ण और समय पर लिया गया फैसला बताते हुए पूनावाला ने कहा कि जो लोग बाहर यात्रा करना चाहते हैं, उन्हें तीसरी खुराक के बिना ऐसा करना मुश्किल हो रहा है क्योंकि कई देशों ने उन लोगों पर प्रतिबंध लगा दिया है जिन्होंने बूस्टर खुराक नहीं ली है। इसके साथ ही इसकी कीमत का भी आज खुलासा हो गया है।

मुफ्त नहीं होगा तीसरा डोज: हेल्थकेयर कर्मचारी, फ्रंटलाइन स्टाफ और 60 साल से ऊपर के लोगों के लिए घोषित बूस्टर खुराक के विपरीत, तीसरा डोज अधिकांश वयस्कों के लिए मुफ्त नहीं होगा। पूनावाला ने एक न्यूज चैनल को बताया कि कोविशील्ड पर पहले की तरह 600 रुपये खर्च होंगे। कोवोवैक्स एक बार बूस्टर के रूप में स्वीकृत होने के बाद 900 रुपये में उपलब्ध होगा। उन्होंने बताया कि कोविशील्ड को बूस्टर खुराक के रूप में स्वीकृत किया गया है और कोवोवैक्स को आखिरकार बूस्टर के रूप में भी स्वीकृत किया जाएगा।

ओमिक्रॉन पर तकरार

नई दिल्ली: कोरोना वायरस के नए संस्करण ने एक बार फिर सभी देशों को फ्रिक में डाल दिया है। हाल में आया ओमिक्रॉन-एक्सई वैरिएंट ओमिक्रॉन के दो स्वरूपों बीएवन और बीएटू से यह मिलकर बना है। ब्रिटेन समेत कई देशों में इस वक्त तेजी से संक्रमण फैल रहा है। अब कुछ इस तरह की खबरें हैं कि नया वैरिएंट भारत में भी दस्तक दे चुका है। देश मे महाराष्ट्र के मुंबई में ओमिक्रॉन-एक्सई का पहला केस सामने आया है। महाराष्ट्र सरकार ने भी इसकी पुष्टि की है। लेकिन केंद्र सरकार ने इसकी पुष्टि नहीं की है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने इसे महाराष्ट्र सरकार का जल्दबाजी में किया गया निष्कर्ष बताया है। हालांकि केंद्र इसकी जांच शुरू कर दी है। दरअसल, बृहन्मुंबई महानगरपालिका निगम ने बुधवार को बताया था कि शहर में ओमिक्रॉन-एक्सई का मामला सामने आया है। दक्षिण अफ्रीका से आई एक 50 वर्षीय कॉस्ट्यूम डिजाइनर से लिए गए नमूनों में इसकी पुष्टि हुई है। यह डिजाइनर 10 फरवरी को भारत आईं थीं।

उनमें कोरोना के कोई लक्षण नहीं दिखे थे। हालांकि औपचारिक प्रक्रिया के तहत उनके नमूने लिए। नमूनों की जांच और जीनोम-सिक्वेंसिंग कराई गई। इसमें पाया गया कि वह ओमिक्रॉन-एक्सई से संक्रमित थीं। इसके बाद महाराष्ट्र सरकार ने भी बयान जारी किया, जिसमें कहा गया कि मुंबई में संभवतया ओमिक्रॉन-एक्सई की आमद हो चुकी है।

'किसी गरीब की झोपड़ी-दुकान पर न चलाएं बुलडोजर'

लखनऊ: यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अफसरों को सख्त निर्देश दिए हैं कि किसी गरीब की झोपड़ी और दुकान पर बुलडोजर न चलाएं। बुलडोजर सिर्फ पेशेवर माफिया, दुर्दांत अपराधी और माफियाओं की अवैध संपत्ति पर ही चलाएं। उन्होंने कहा कि ऐसे माफिया जिन लोगों ने कमजोरों और व्यापारियों की संपत्ति पर अवैध कब्जा कर लिया हो सिर्फ उनके खिलाफ ही कार्रवाई की जाए। किसी को परेशान न किया जाए। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि गरीबों की संपत्ति पर कब्जा करने वालों पर त्वरित एक्शन लिया जाए। अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस तथा गरीबों के प्रति संवेदनशीलता योगी सरकार का पिछले पांच साल मूलमंत्र रहा है। दूसरी पारी में भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसी सिद्धांत को प्रशासन में आगे बढ़ाया है।

अवैध मून सिटी पर चला बुलडोजर: एलडीए के प्रवर्तन दल ने अवैध हाउसिंग सोसाइटी मून सिटी पर बुलडोजर चला इसे ध्वस्त कर दिया है। इसके साथ ही दो अन्य इलाकों में भी अवैध निर्माण पर कार्रवाई की गई। प्रवर्तन जोन तीन के जोनल अधिकारी कमल जीत सिंह ने बताया कि नरेन्द्र तिवारी एवं आशीष शर्मा द्वारा ग्राम व पोस्ट मौदा काकोरी पर प्राधिकरण से बगैर नक्शा स्वीकृत कराए लगभग 10 वर्ष पूर्व अनाधिकृत रूप से मून सिटी नाम से अवैध प्लॉटिंग की गई थी। निर्माण के संबंध में कोई स्वीकृत मानचित्र व साक्ष्य न प्रस्तुत करने पर विहित न्यायालय के आदेश पर इसे ध्वस्त किया गया। इसी जोन में रईस अहमद ने मौजा प्यारेपुर में बगैर नक्शा स्वीकृत कराए अवैध प्लॉटिंग की गई थी, जिसमें ग्रुप हाउसिंग निर्माण एवं डुप्लेक्स भवनों पर रोहाउसिंग का भी निर्माण किया गया था, जिसे ध्वस्त किया गया।

न्यूज फ्लैश

'बिना डेबिट कार्ड के किसी भी एटीएम से निकाल सकेंगे पैसा'

नई दिल्ली: डिजिटलीकरण जहां लोगों के फायदे का सौदा बना है, तो इसके नुकसान भी कम नहीं हैं। ऑनलाइन फ्रॉड के मामले आए दिन सामने आते रहते हैं, इसके साथ ही एटीएम पर कार्ड क्लोनिंग जैसी घटनाओं से आम जनता को नुकसान उठाना पड़ता है। इन बातों को संज्ञान में लेते हुए अब भारतीय रिजर्व बैंक ने एक बड़ा एलान किया है। इसके तहत अब हर बैंक के एटीएम पर कार्डलैस कैश निकासी की सुविधा उपलब्ध होगी।

आरबीआई गवर्नर ने की घोषणा: आरबीआई की मॉनिटरी पॉलिसी की बैठक के नतीजों को सामने रखते हुए गवर्नर शक्तिकांत दास ने ये बड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा कि डिजिटल धोखाधड़ी के बढ़ते मामलों पर लगाम लगाने के लिए आरबीआई प्रतिबद्ध है।

यूपीआई के जरिए कर सकेंगे निकासी: इस सुविधा के तहत अब यूपीआई की मदद से किसी भी बैंक के एटीएम से बिना डेबिट कार्ड का उपयोग किए ही पैसे निकाले जा सकेंगे। यहां बता दें कि कुछ चुनिंदा बैंक पहले से ही अपने ग्राहकों को ये कार्डलैस सुविधा मुहैया करा रही है। लेकिन, अब गवर्नर दार के एलान के बाद सभी बैंकों को ये सुविधा अपने एटीएम पर देनी होगी।

मुंबई में शरद पवार के घर के बाहर उग्र प्रदर्शन

मुंबई: एनसीपी प्रमुख शरद पवार के मुंबई स्थित घर यानी 'सिल्वर ओक' अपार्टमेंट के बाहर स्टेट ट्रांसपोर्ट के कर्मचारी उग्र प्रदर्शन कर रहे हैं। हजारों की संख्या में पहुंचे कर्मचारी लगातार नारेबाजी कर रहे हैं और कुछ ने घर पर पथराव भी किया है, जिसके बाद पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे लोगों पर लाठीचार्ज कर दिया है। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव की स्थिति लगातार बनी हुई है। महाराष्ट्र में पिछले छह महीने से महाराष्ट्र राज्य सड़क परिवहन निगम के कर्मचारी लगातार हड़ताल और प्रदर्शन कर रहे हैं।

आरबीआई ने ब्याज दर में नहीं किया बदलाव, रेपो रेट 4 फीसदी पर बरकरार

नई दिल्ली: रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने प्रमुख ब्याज दर में फिलहाल कोई बदलाव नहीं किया है। आरबीआई ने रेपो रेट को 4 फीसदी पर बरकरार रखा है, जबकि रिवर्स रेपो रेट में 0.40 फीसदी का इजाफा किया है। रिवर्स रेपो रेट अब बढ़कर 3.75 फीसदी हो गया है। गवर्नर शक्तिकांत दास ने शुक्रवार को चालू वित्त वर्ष की पहली मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक के नतीजों का ऐलान करते हुए यह जानकारी दी। रिजर्व बैंक गवर्नर शक्तिकांत दास ने एमपीसी के नतीजों का ऐलान करते हुए कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) ग्रोथ का अनुमान 7.8 फीसदी से घटारक 7.2 फीसदी कर दिया है।

'मुल्लापेरियार बांध की मानिटरिंग जारी रखे सुपरवाइजरी कमेटी'

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने मुल्लापेरियार बांध की सुरक्षा की मानिटरिंग करनेवाली सुपरवाइजरी कमेटी को निर्देश दिया है कि वो बांध के सुरक्षा प्रबंधों की मानिटरिंग करना जारी रखे। जस्टिस एएम खानविलकर की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि बांध सुरक्षा अधिनियम के तहत जब तक राष्ट्रीय बांध सुरक्षा प्राधिकार काम शुरू नहीं कर देता है तब तक सुपरवाइजरी कमेटी बांध की सुरक्षा की मानिटरिंग करती रहेगी। कोर्ट ने सुपरवाइजरी कमेटी के काम की सराहना करते हुए इस कमेटी में केरल और तमिलनाडु से एक-एक तकनीकी विशेषज्ञ को शामिल करने का आदेश दिया।

कैबिनेट बैठक:अब राशन की दुकानों पर फोर्टिफाइड चावल मिलेगा

नई दिल्ली: आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमेटी ने राशन की दुकानों समेत अन्य माध्यम से फोर्टिफाइड चावल वितरित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसकी जानकारी दी। स्टेट एजेंसीज ने सप्लाई और डिस्ट्रीब्यूशन के लिए 88.65 एलएमटी फोर्टिफाइड चावल की खरीद की है।

तीन फेज में लागू: सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में इस स्कीम को 2024 तक तीन फेज में लागू किया जाएगा। स्कीम पर केंद्र सरकार के सालाना 2700 करोड़ रुपए खर्च होंगे। पिछले साल 15 अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की थी कि सरकार कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिए मध्याह्न भोजन जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गरीबों को फोर्टिफाइड चावल वितरित करेगी।

महिलाओं और बच्चों में कुपोषण की खबरों के बीच सरकार उनके आदेशों का पालन कर रही है।

फोर्टीफिकेशन क्या है?: फोर्टीफिकेशन एक ऐसी प्रोसेस है जिसके माध्यम से भोजन में आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन बी-12 जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों को ऐड किया जाता है। शॉर्ट टर्म में पोषण की समस्या को दूर करने के लिए ये एक प्रभावी रणनीति है।

राजस्थान में चल रहा तालिबानी शासन: भाजपा

नई दिल्ली: भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राजस्थान की कांग्रेस सरकार पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि है कि ऐसी लगता है कि प्रदेश में तालिबानी शासन है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता राज्यवर्धन सिंह राठौर और राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष डॉ सतीश पुनिया ने यहां एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर अशोक गहलोत सरकार पर जमकर निशाना साधा।

लॉकअप में है लोकतंत्र का चौथा स्तंभ: राहुल गांधी

नई दिल्ली: कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा सरकार में लोकतंत्र का चौथा स्तंभ खतरे में है। राहुल ने शुक्रवार को ट्वीट कर मध्य प्रदेश में पत्रकारों के साथ हुए दुर्व्यवहार पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पर भाजपा सरकार का बहुत दबाव है। यहां पत्रकारों को सच कहने की आजादी नहीं है। अगर कोई पत्रकार सच बोलने की हिम्मत करता है तो उसे भाजपा सरकार या तो जलील करती है या फिर जेल भेज देती है।

राहुल ने कहा कि नये भारत की सरकार को गोदी मीडिया पसंद है। यह सरकार सच से डरती है। उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश के सीधी जिले में बीते दिनों पत्रकारों और रंगकर्मियों को पुलिस स्टेशन में बंद कर उनके कपड़े उतरवाने का एक मामला सामने आया था। पत्रकारों और रंगकर्मियों का एक फोटो भी सोशल मीडिया पर लगातार वायरल हो रहा है। जिसमें इन लोगों को पुलिस ने अर्धनग्न खड़ा कर रखा है। इस मामले को लेकर कांग्रेस भी लगातार भाजपा सरकार की आलोचना कर रही है।

'8 साल में 2.50 करोड़ से अधिक प्रधानमंत्री आवास बनाने का काम किया'

नई दिल्ली: भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह ने शुक्रवार को कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि विपक्षी दल की सरकार ने प्रति वर्ष केवल 11 लाख मकान ही बनाए, जबकि मौजूदा नरेन्द्र मोदी सरकार ने मात्र 8 साल में 2.50 करोड़ से अधिक घर बनाने का काम किया है। भाजपा मुख्यालय में गिरिराज सिंह और पार्टी प्रवक्ता केके शर्मा ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। सिंह ने कहा कि रोटी, कपड़ा और मकान की चर्चा तो सब सरकारों ने की, लेकिन देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीब कल्याण लाकर रोटी, मकान एवं कपड़े की व्यवस्था की। इसके साथ ही आवास योजना के द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अगर 60 साल बनाम 8 साल की बात करें तो। 60 साल में केवल 3 करोड़ 26 लाख घर इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत बनें। जबकि मात्र 8 साल में मोदी सरकार ने 2.50 करोड़ से अधिक घर बनाने का काम किया है। अभी तक शहर में 58 लाख पक्के मकान बन चुके हैं। सिंह ने कांग्रेस की छत्तीसगढ़ और तृणमूल कांग्रेस की पश्चिम बंगाल सरकार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि गरीबों को प्रधानमंत्री आवास के मामले में छत्तीसगढ़ और प.बंगाल की सरकार पीछे रहे हैं। ये दुर्भाग्यपूर्ण की बात है कि इन दोनों सरकार ने इस दिशा में अच्छा काम नहीं किया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने करीब 35 लाख से अधिक मकान प्रति वर्ष बनाए हैं। जबकि कांग्रेस शासन में प्रति माह 94 हजार घर बनाए गए और मोदी सरकार में हमने 2.62 लाख से ज्यादा आवास प्रतिमाह बनाए हैं।

जलवायु परिवर्तन: देश के 6 शहर 2050 तक डूब जाएंगे

मुंबई, कोच्चि जैसे शहरों पर पड़ेगा टेम्परेचर और तूफानों का असर; हाजी अली और वर्ली सी-लिंक समंदर में समा जाएंगे

नई दिल्ली: देश में समुद्र तट के किनारे मौजूद शहरों पर समुद्र के बढ़ते जलस्तर के असर को लेकर चौंकाने वाला एनालिसिस सामने आया है। ग्लोबल रिस्क मैनेजमेंट फर्म के मुताबिक मुंबई, कोच्चि, मैंगलोर, चेन्नई, विशाखापट्टनम सहित तिरुवनंतपुरम में कई बड़ी इमारतें और सड़कें 2050 तक डूब जाएंगी। एनालिसिस में पाया गया है कि मुंबई के हाजी अली दरगाह, जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, बांद्रा-वर्ली सी-लिंक के डूबने का खतरा है। यह बात इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज की असेसमेंट रिपोर्ट के आधार पर कही है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के नए डेटा और प्रभाव को लेकर बनाए गए मॉडल का भी इस्तेमाल किया गया।

एनालिसिस के लिए 6 शहरों के डिजिटल मॉडल बनाए गए: जलवायु परिवर्तन को लेकर पब्लिश की गई सबसे लेटेस्ट इस रिपोर्ट का नाम 'क्लाइमेट चेंज 2021: द फिजिकल साइंस बेसिस' है। इस एनालिसिस के लिए देश के 6 तटीय शहरों मुंबई, चेन्नई, कोच्चि, विशाखाप ट्टनम, मैंगलोर और तिरुवनंतपुरम को शामिल किया गया। एक्सपर्ट्स ने इन शहरों के समुद्री किनारे के लिए एक हाई रेजोल्यूशन डिजिटल मॉडल तैयार किया। इसके बाद जलस्तर और बाढ़ को मापने के लिए एक मैप तैयार किया। अनुमान जताया है कि 2050 तक भारत के चारों ओर समुद्र का जलस्तर काफी बढ़ जाएगा।

2050 में नॉर्थ इंडियन ओशन का जलस्तर 1 फीट बढ़ेगा: जलवायु परिवर्तन को लेकर मिनिस्ट्री ऑफ अर्थ साइंसेस ने भी कहा है कि नॉर्थ इंडियन ओशन के जलस्तर में साल 1874-2004 के दौरान हर साल 1.06-1.75 मिमी की रेट से बढ़ोतरी देखी गई। वहीं, 1993-2017 के दौरान हर साल 3.3 मिमी का इजाफा हुआ। दोनों ही मामलों में यह बढ़ोतरी दुनिया भर में समुद्र के जलस्तर में हो रहे औसत बढ़ोतरी रेट के बराबर है। 2050 में नॉर्थ इंडियन ओशन का स्थिर जलस्तर 1986 से 2005 के दौरान रहे जलस्तर के मुकाबले करीब 300 मिमी यानी 1 फुट बढ़ जाएगा।

रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक औसत वृद्धि के लिए ये अनुमान करीब 180 मिमी है।

आसाराम के आश्रम के कार में मिला किशोरी का शव

गोंडा: गोंडा-बहराइच मार्ग पर विमौर गांव में संत आसाराम बापू आश्रम परिसर में खड़ी कार में एक किशोरी का शव मिला है। किशोरी बीते पांच अप्रैल की देर शाम घर से गायब हुई थी। इस मामले में स्वजन ने तीन लोगों के खिलाफ अपहरण का मुकदमा कराया था। आश्रम में खड़ी कार से बदबू आने के बाद चौकीदार ने कार में शव को देखा तो सूचना दी। बताया जा रहा है कि किशोरी का शव मिलने की जानकारी होने पर डीएम डा. उज्जवल कुमार व एसपी संतोष कुमार ने पहुंचकर जानकारी ली। इसके साथ ही इस घटना का राजफाश व आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए पांच टीमों को लगाया गया है।

खबर संक्षेप

मनाया गया मंगल पांडे का शहीद दिवस

सहसों। केंद्रीय कार्यालय पुरुषोत्तमपुर उर्फ गारापुर में नवयुवक ब्राह्मण समाज के तत्वावधान में देश के प्रथम बलिदानी वीर सपूत मंगल पांडे का शहीद दिवस समाज के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर नवयुवक ब्राह्मण समाज के संस्थापक एवं जिला अध्यक्ष पंडित लवकेश कुमार मिश्रा ने कहा की प्रथम बलिदानी मंगल पांडे हमारे समाज के अग्रणी आधार व समाज के सिरमौर एवं आदर्श हैं। परन्तु दुर्भाग्य है कि जब से देश आजाद हुआ है तब से लेकर आज तक चाहे जिस पार्टी की सरकार रही हो किसी भी सरकार ने बलिदानी मंगल पांडे के बलिदान को याद नहीं किया। उन्होंने कहा कि हम इस देश के संविधान के सजग प्रहरी महामहिम राष्ट्रपति एवं केंद्रीय/प्रांतीय सरकार से मांग करते हैं कि मंगल पांडे के शहीद दिवस पर एक दिन का सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाय। इस अवसर पर विनय तिवारी, अंकित तिवारी, बृजेश कुमार मिश्रा, पंकज शुक्ला, मनोज कुमार द्विवेदी, अवधेश शुक्ला, कृष्ण बल्लभ द्विवेदी, नागेन्द्र मिश्रा, श्यामू , विनय अजय, रोहित कुमार, सहित आदि समाज के कार्यकर्ता एवं समाज के संभ्रांत व्यक्ति मौजूद रहे।

मेजा तहसील के बरहाकला में तालाब पर हुए अतिक्रमण को प्रशासन ने जेसीबी से हटाया

अखंड भारत संदेश

अतिक्रमण हटाता जेसीबी

अतिक्रमण हटाने के दौरान उपस्थित अधिकारी व पुलिस के जवान

मेजा रोड। मेजा तहसील क्षेत्र के बरहाकला ग्राम पंचायत के महिंगड़ा गांव स्थित तालाब पर अतिक्रमण करना लोगों को भारी पड़ गया है। तहसील प्रसाशन ने कोर्ट के आदेशानुसार अतिक्रमण मुक्त कराने को लेकर बुलडोजर चलवा दिया। इससे लोगों में हड़कंप मच गया है।

मामला मेजा तहसील क्षेत्र के बरहाकला ग्राम पंचायत के महिगड़ा गांव का है। जहां साढ़े छह बीघे तालाब पर पंद्रह लोगों का कब्जा था। बीते सन 2017 में उक्त गांव के ही बालेश्वर पटेल ने। इलाहाबाद हाई कोर्ट में याचिका दाखिल किया था। जिसपर कोर्ट ने फैसला सुनाया तो लोग हैरत में आ गए। वहीं शुक्रवार की दोपहर मेजा एसडीएम विनोद पाण्डेय, तहसीलदार गजराज यादव,मांडा थानाध्यक्ष महेश मिश्रा बुलडोजर सहित भारी जनसख्या में राजस्व एवम पुलिसकर्मियों के लिए पहुचें। प्रसाशन ने अतिक्रमण कारियों के घर पर बुलडोजर चलवा दिया। इससे लोगों में हड़कंप मच गया है। बतादें की तालाब पर अतिक्रमण उक्त गांव के ही राजकुमार मुसहर,भुल्लर, शारदा, रंगीले, सावन पासी, भोला नाथ, भाई लाल मुसहर, अनंत लाल, बसंत लाल, विजय शंकर सहित कुल पंद्रह लोंगो ने अतिक्रमण कर रखा था। जिसे प्रसाशन ने शुक्रवार की दोपहर दो बजे बुलडोजर से मकानों को ध्वस्त करा दिया है। इस कार्यवाही के दौरान सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर मांडा थानाध्यक्ष महेश मिश्रा, दिघिया व भारतगंज चौकी प्रभारी राम बहादुर सिंह, आशीष राय, दरोगा सुभाष यादव, जितेंद्र सिंह, गुरु प्रसाद प्रजापति सहित भारी जनसंख्या पुलिसबल तैनात रही। उक्त ध्वस्तीकरण के मामले में मजा एसडीएम विनोद पाण्डेय ने जानकारी देते हुए बताया है कि हाईकोर्ट के आदेशानुसार अतिक्रमीत मकानों पर बुलडोजर चलवाया गया है।

हालांकि एसडीएम ने बताया कि पीड़ितों को रहन सहन के लिए जमीन दी जाएगी।

न्यूज झरोखा

आवास विकास कालोनी में बिजलेन ने मारा छापा 19 पर बिजली चोरी का मामला दर्ज

झूंसी। बिजली विभाग व विजलेंश की सयुक्त कार्यवाही में 19 लोग बिजली चोरी करते पकडे गए। सभी के खिलाफ विधुत चोरी का मामला दर्ज किया गया। सघन चेकिंग के दौरान उपभोगताओं में पूरे दिन हड़कम्प मच रहा। गर्मी में ओवर लोड के चलते इन दिनों लोकल फाल्ट, लो बोल्टेज की समस्या बढ़ गई है। बढ़े ओवरलोड को देखते हुए एसडीओ झूंसी विजय कटारिया के नेतृत्व में दो दिनों से अभियान चला कर लोड व बिजली चोरी पकड़ी जा रही है। शुक्रवार को विधुत विभाग के साथ विजलेंश की टीम ने आवास विकास कालोनी में 19 लोगो को काटिया लगा कर चोरी करते पकड़ा गया। सभी के खिलाफ बिजली चोरी का मामला दर्ज कराया गया। एसडीओ ने बताया कि आगे भी अभियान चला कर बिजली चोरी पकड़ी जायेगी।

शिवगढ़ चौराहे पर किया सघन वाहन चेकिंग अभियान

सोरांव। अपराध और अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए शुक्रवार को थाना प्रभारी सोरांव अशोक कुमार के निर्देशन में सोरांव थाना क्षेत्र के शिवगढ़ चौराहे पर शाम सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। जिसमे कई वाहन चालकों को रोककर यातायात का नियम भी बताया गया। और लोगों के वाहन का चालान किया गया। इस मौके पर सब इंस्पेक्टर मनोज कुमार राय, दरोगा भूपेंद्र कुमार, कांस्टेबल करन कुमार,अभिषेक कुमार मौके आदि लोग मौके पर रहे।

गायब सगी दो बहनों को मेजा पुलिस ने किया बरामद

मेजा रोड। मेजा पुलिस ने इलाके की दो बच्चियां सगी बहनों को 24 घंटे के अंदर सकुशल बरामद कर परिजनों को सौंप दिया ' बता दें कि थानाध्यक्ष मेजा धीरेन्द्र सिंह, दरोगा अमृत जायसवाल, हेड कांस्टेबल अरविन्द चौबे व महिला कांस्टेबल कादम्बरी ने दोनों बच्चियों को सकुशल बरामद कर परिजनों को सौंप दिया। जिससे परिजनों मे खुशी देखने को मिली तथा. परिजनों ने पुलिस को धन्यवाद बोलते हुए चले गए।

स्मार्टफोन व टैबलेट पाकर छात्र-छात्राओं के खिले चेहरे

घूरपुर। शुक्रवार को गांधी शांति निकेतन डिग्री कॉलेज गौहनिया में सरकार के द्वारा चलाई जा रही मुहिम टैबलेट व स्मार्टफोन वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें 101 स्मार्ट फोन व 9 टैबलेट छात्र छात्राओं को वितरित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा जिलामंत्री कमलेश त्रिपाठी ने कहा कि इससे छात्र छात्राओं को आगे की तैयारी में काफी मदद मिलेगी सरकार की यह योजना काफी सराहनीय है। कोरोना काल में छात्रों को काफी मदद मिली थी।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रचार्य डॉ लाल जी त्रिपाठी,विनोद तिवारी,सतीश शुक्ला,डॉ गया प्रसाद,डॉ अविनाश दुबे, अनिल मिश्रा, सुरेश पांडेय,सुभाशी त्रिपाठी,पंकज पांडेय आदि मौजूद रहे।

सपा के निर्विरोध ब्लांक प्रमुख इंद्रनाथ भी हुए भगवाधारी

कौंधियारा। पूर्व विधायक बारा स्व० रमाकांत मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र इंद्रनाथ मिश्रा एमएलसी चुनाव के वोटिंग से पहले भाजपा में हुए शामिल । सत्ता के विपरीत लहर में भी परिवार की विरासत को संभालने वाले इंद्रनाथ मिश्रा समाजवादी पार्टी के समर्थन से जिले में एकमात्र निर्विरोध ब्लांक प्रमुख निर्वाचित होकर राजनीतिक दिग्गजों को अपनी हैसियत का एहसास करा चुके हैं ऐसे में आज उनके द्वारा भाजपा का दामन थामने से समाजवादी पार्टी को तगड़ा झटका लगा है क्योंकि ब्लांक प्रमुख कौंधियारा की कुर्सी पर वे स्वयं तीसरी बार निर्वाचित है इसके पहले उनकी बहू अनू मिश्रा भी ब्लांक प्रमुख थी विकासखंड कौंधियारा की प्रमुख की कुर्सी पर सीट आरक्षित होने पर भी अपने समर्थित प्रत्याशी को आसानी से चुनाव जीता चुके हैं ऐसे में एमएलसी वोटिंग से ठीक पहले भाजपा के लिए इस ब्लांक में बड़े गेमचेंजर साबित होंगे और आने वाले लोकसभा चुनाव में भी इस इलाके में भाजपा को बढ़त दिलाने में बड़ी भूमिका निभायेंगे।

दल बदल कर समाजवादी पार्टी में शामिल हुए अमरनाथ मौर्य का चेयरमैन पद छिना

भूपेंद्र सिंह पटेल बने डीसीबी के कार्यवाहक चेयरमैन

प्रयागराज। जिला को ऑपरेटिव बैंक प्रयागराज के चेयरमैन अमरनाथ सिंह मौर्य ने हाल ही में भारतीय जनता पार्टी छोड़कर समाजवादी पार्टी का दामन थाम लिया था और समाजवादी पार्टी से शहर पश्चिमी प्रयागराज विधानसभा से चुनाव में अपनी दावेदारी भी किया था इसी बीच में अमरनाथ के निर्वाचन व प्राथमिक सदस्यता पर सवाल उठाए गए जिसकी जांच उपायुक्त एवं उपनिबंधक सहकारिता उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल प्रयागराज द्वारा की गई और पाया गया कि अमरनाथ सिंह मौर्य की सदस्यता अनहर्ता की श्रेणी में आती है तत्क्रम में अमरनाथ मौर्य की सदस्यता समाप्त करने व चेयरमैन पद से हटाने की कार्यवाही हेतु संचालक मंडल की बैठक आज जिला कोऑपरेटिव बैंक प्रयागराज के सभागार में संपन्न हुई ' बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए अमरनाथ मौर्य की प्राथमिक सदस्यता समाप्त करते हुए चेयरमैन पद से हटाने का निर्णय लिया गया तत्पश्चात भूपेंद्र सिंह पटेल जो कि संचालक मंडल के उपाध्यक्ष हैं , को चेयरमैन पद का कार्यभार सौंप दिया गया है ' भूपेंद्र सिंह पटेल को चेयरमैन पद का दायित्व मिलने पर सांसद कौशांबी विनोद सोनकर सांसद श्रीमती केसरी देवी पटेल विधायक प्रवीण पटेल,पूर्व विधायक दीपक पटेल भाजपा जिलाध्यक्ष कौशांबी श्रीमती अनीता त्रिपाठी भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी पुष्पराज सिंह शिव शंकर सिंह एडवोकेट हाई कोर्ट , सहित संचालक मंडल के सत्यम शिवम तिवारी सहित समस्त सदस्यगणों ने भूपेंद्र सिंह पटेल को चेयरमैन पद की जिम्मेदारी मिलने पर बधाई एवं उज्ज्वल कार्यकाल की शुभकामनाएं दी है।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग सैकड़ों बीघा गेहूं की फसल जलकर खाक

फसल में लगी आग को बुझाने आई दमकल

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। कोरांव थाना क्षेत्र के भागेश्वर गांव के पूरा गजनी मे शुक्रवार को दोपहर लगभग 1:00 बजे शार्ट सर्किट होने से एक किसान के खेत में आग लग गई। जिससे गेहूं की खड़ी फसल जलने लगी। सूचना पर पहुंची पुलिस व फायर ब्रिगेड ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। फिर भी दर्जनों किसानों की सैकड़ों बीघा गेहूं की फसल जल गई। मिली जानकारी के अनुसार राकेश कुमार पुत्र झुन्नीलाल निवासी ग्राम भागेश्वर पूरा गजनी के खेत के पास से बिजली का तार गया था। दोपहर के समय अचानक खेत में देखते ही ग्रामीणों ने शोर मचाया मौके पर जब ग्रामीण इकट्ठा हुए तो देखा कि बिजली की चिंगारी से आग लगी है। किसानों ने विद्युत विभाग के जर्जर तार पर काफी नाराजगी व्यक्त की है। जबकि कुछ किसानों का गेहूं की सारा फसल जलकर खाक हो गयी। इंद्रजीत, रामचंद्र, प्रदीप कुमार, शैलेश कुमार, गोकुला प्रसाद, रामजतन, संतलाल, दिलीप कुमार, जमुना प्रसाद, बलराम पांडे, यशोदा नंद पांडे, रामदेव सिंह, राम बहादुर सिंह, विंध्यवासिनी प्रसाद सिंह, लौकुश सिंह, दूधनाथ सिंह, सुनील सिंह, हरिहर प्रसाद सिंह, रोहिणी प्रसाद पाल पूर्व जिला पंचायत सदस्य, और हीरालाल पुत्र रामसुपारस का पूरी गृहस्थी जलकर खाक हो गई।

कौंधियारा पॉवर हाउस के समीप शार्ट सर्किट से गेहूं की कई बीघे फसल जलकर खाक

कौंधियारा। कौंधियारा पावर हाउस से महज 500 मीटर की दूरी पर बिजली की हाईटेंशन तार में हुई शॉर्ट सर्किट से जहां गेहूं के खेत में आग लगी हुई आग लगने से लगभग 50 बीघा गेहूं की फसल जलकर राख हो गई मौके पर मौजूद किसानों के द्वारा जहां आग बुझाने का अथक प्रयास किया गया लेकिन वह कामयाब नहीं हो पाए अगर देखा जाए तो जरा थाना क्षेत्र के नवादा गांव में जहां बिजली के शॉर्ट सर्किट से आग लगने के कारण कई बीघे गेहूं की फसल जली वहीं किसानों के द्वारा स्थानीय पुलिस के साथ-साथ फायर ब्रिगेड को भी सूचना चाहिए लेकिन मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने आग बुझाने में नाकाम साबित की विक्रांता को देखते हुए जहां वहां मौजूद स्थानीय किसानों ने भी आग को बुझाने में काम या कामयाब रहे वहीं किसानों के द्वारा बताया गया कि बिजली विभाग की लापरवाही का खामियाजा किसानों को भुगतना पड़ रहा जहां 4 महीने बाद कड़ी मेहनत से किसी तरह के अपने फसल को बचाने में कामयाब रहे तो आग की लपटों ने ही चंद मिनटों में 50 से भी ज्यादा गेहूं की फसल को राख में तब्दील कर दिया किसानों ने रोते हुए बताया कि आप क्या खाएंगे और उनके घरों में रहने वाले गोवंश भी भूसा कहां मिल पाएगा लेकिन बिजली विभाग को इससे क्या हुआ तो अपनी लापरवाही ओं में ही मस्त हैं जबकि इससे गुस्साए किसानों ने यारा पावर हाउस में पहुंचकर घेराव भी किया लेकिन वहां पर मौजूद कर्मचारी ताला बंद करके पावर हाउस से ही भाग निकले।

शिवगढ़ स्कूल में निकाली गई सर्व शिक्षा अभियान की रैली

अखंड भारत संदेश

रैली निकाल ते छात्र-छात्राएं

सोरांव। नवीन सत्र में बच्चों के नामांकन हेतु अभिभावकों को जागरूक एवं प्रेरित करने के उद्देश्य से पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगढ़ में शुक्रवार को ढोल नगाड़े संग एक रैली निकाली गई। तथा अभिभावकों से संपर्क के दौरान शिक्षकों ने सरकारी विद्यालयों में मिलने वाले गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा निःशुल्क सुविधाओं से सभी को अवगत कराया। तथा यह भी कहा गया कि कला क्राफ्ट के अंतर्गत नित प्रयोग वस्तुओं से आकर्षक उपयोगी वस्तुएं बनाना भी बच्चो को सिखाया जा रहा है।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगढ़ की जिम्मेदार प्रधानाध्यापिका सुनीता सिंह ने कही कि नवीन सत्र में बच्चों के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें विभाग द्वारा अविलंब उपलब्ध हो जायेगी। बच्चे अपनी पुरानी पुस्तकें लेकर ही आए। और शिक्षा ग्रहण करें। शिक्षण कार्य बच्चों के अनुकूल सृजनात्मक परिवेश को बनाने का कार्य विद्यालय के प्रधानाध्यापिका सुनीता सिंह सभी शिक्षकों के सहयोग के साथ उत्साह से शिक्षण कार्य कर रही है। वहीं नारायणपुर स्कूल की प्रधानाध्यापिका रुचि सिंह बच्चो को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए रात- दिन लगी रहती हैं। और क्षेत्र में घर- घर जाकर अविभावकों को अपने- अपने बच्चो को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करती हैं। तो वहीं शिवगढ़ की सुनीता सिंह ने भी बच्चो को शिक्षित करने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ती हैं। सुनीता सिंह ने कही कि शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पिएगा वही दहाड़ेगा। और विद्यालय फूलों का बगीचा है। बच्चे विद्यालय के फूल है। और वहां पर मौजूद शिक्षक रूपी माली जितना अच्छे ढंग से रखवाली करेगा। उतना ही बढ़िया ढंग से फूल खिलेगा। जिससे बच्चो संग अपना और विद्यालय का भी नाम रोशन होगा। इस मौके पर ग्राम पंचायत अधिकारी अखिलेश कुमार,अर्चना आनंद, संगीता त्रिपाठी,यासमीन,सोनाली कुमारी, कंचन कार्य, शिक्षा मित्र स्वेता शुक्ला संग ग्राम प्रधान संजय यादव, प्रधान कमलेश सरोज, शिव मूरत यादव संग दर्जनों लोग मौजूद रहे।

बिजली के करेंट की चपेट में आने से 40 वर्षीय व्यक्ति की मौत

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। थाना खीरी प्रयागराज अंतर्गत पिपराँव गाँव निवासी शिव प्रसाद शर्मा पुत्र प्यारे लाल शर्मा सुबह 10 बजे के आस पास घर के पास मुनगा के पेंड़ पर चढ़कर मुनगा तोड़ रहे थे, अचानक पेंड़ के पास प्रवाहित हो रही बिजली के करेंट की चपेट में आने से बुरी तरह झुलस गए और मौके पर ही मौत हो गयी। मौके पर पहुँचे खीरी थाना अध्यक्ष वैकुंठ नाथ पाण्डेय, उ 0 नि 0 अवध कुमार गौतम, हेड कांस्टेबल रामतेज यादव ,बरकात खान, नरेश चौधरी आदि एवं स्थानीय लोगों की मदद से शव को नीचे उतारा गया और पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।वहीं परिवार जनों का रो रो के बुरा हाल है। मृतक के दो बच्चे और एक बच्ची है। मृतक के परिवार की मालीय हालत बहुत खराब है, मृतक ही पूरे परिवार का खर्च उठाता था जिसके अब न रहने पर परिवार बिखर सकता है।

47वां शतचंडी महायज्ञ रविवार को

सहसों। आदिशक्ति मां जगदंबा कृपा स्वरूप गारापुर स्थित माता चौरा मंदिर पर श्री श्री 1008 राम चेतन ब्रह्मचारी जी के संरक्षण में 2 अप्रैल से चल रहे 46वां एवं 47वां शतचंडी महायज्ञ एवं देवी भागवत पुराण महायज्ञ की पूर्णाहुति रविवार को होगा उक्त आशय की जानकारी आयोजक दयाशंकर तिवारी ने दी। इसी प्रकार रामनाथ पट्टी स्थित दुर्गा मंदिर पर भी दशम शतचंडी महायज्ञ का पारायण रविवार को पूजन हवन के साथ संपन्न किया जाएगा तथा सोमवार को महाप्रसाद का आयोजन किया गया है। उक्त जानकारी पुजारी मुन्ना दुबे ने दी है।

वित्तविहीन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का केंद्र व्यवस्थापक पद से हटाना मा. उच्च न्यायालय के आदेश का खुला उल्लंघन : ननकेश बाबू

अखंड भारत संदेस

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ (वित्तविहीन गुट) प्रयागराज ने बोर्ड परीक्षा 2022 में गत 2 अप्रैल 2022 के शासनादेश जिसमे वित्तविहीन विद्यालयों के प्रदेशभर के प्रधानाचार्यों को केंद्र व्यवस्थापक पद से हटाने सम्बन्धी निर्णय का जोरदार विरोध किया है तथा इसे वित्तविहीन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के साथ खुला दुर्व्यवहार करार दिया है।

ज्ञात हो कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेश पर विगत ग्यारह वर्षों से लगातार केंद्र व्यवस्थापक का पदभार वित्तविहीन विद्यालयों के प्रधानाचार्य निर्वहन करते चले आ रहे हैं जो मा. उच्च न्यायालय के आदेश वर्ष 2011 के क्रम में शासनादेश निर्गत किया गया था। गत दिवस बलिया में एक विद्यालय में अंग्रेजी के प्रश्नपत्र लीक होने का सहारा लेकर प्रदेश भर के वित्तविहीन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को केंद्र व्यवस्थापक पद से हटाया गया है जो मा. उच्च न्यायालय के आदेश का खुला उल्लंघन है। संघ के प्रदेश अध्यक्ष/शिक्षक विधायक मा. लाल बिहारी यादव के नेतृत्व में प्रतिनिधि मण्डल ने मिलकर शासनादेश के विरोध में पत्र देकर अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा तथा निदेशक मा. शिक्षा उ.प्र. लखनऊ से मिलकर उक्त आदेश का कड़ा विरोध किया है। यदि वित्तविहीन विद्यालयों के प्रदेशभर के प्रधानाचार्यों के साथ सौतेला व्यवहार किया गया तो संगठन आंदोलन के लिए बाध्य होगा। उक्त परिपेक्ष में एक आकस्मिक बैठक करछना कार्यालय पर जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमे मा. उच्च न्यायालय के आदेश को ठुकराकर वित्तविहीन विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को बोर्ड परीक्षा से हटाने की कटु भर्त्सना की कि प्रदेश अध्यक्ष द्वारा किये गये प्रयास का भूरि भूरि प्रशंसा की।बैठक में मण्डल अध्यक्ष अभयराज सिंह, सीता शरण सिंह, बुधराम यादव, बालेंद्र गौतम, फूलचंद्र कन्नौजिया, गोविन्द प्रसाद भुर्तिया, अमर बहादुर, भुवाई लाल यादव, जेपी यादव, शिवमूरत पटेल, कमलचंद, प्रेमचन्द,सीवी यादव, अमरचंद गुप्ता, बृजलाल प्रजापति, वीरेंद्र कुशवाहा, आदर्श यादव, अरविन्द यादव, सर्वेश, महेंद्र द्विवेदी, शिवमोहन पटेल, सहित अनेक शिक्षक एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।

पांच अवैध ओवर लोड ट्रकों को पकड़ किया सीज

घूरपुर। घूरपुर थाने का प्रभार संभाल रहे आईपीएस चिराग जैन ने घूरपुर थाना क्षेत्र से बिना रावण अवैध ओवर लोड खनन सामग्री लादकर निकल रहे पांच ट्रकों को पकड़ कर सीज किया है ।आईपीएस की इस कार्रवाई से ओवर लोड वाहनों को पास कराने वाले लोगों में हड़कम्प मचा हुआ है। मध्यप्रदेश से काली गिट्टी व लाल बालू लादकर ओवर लोड निकलने वाले ट्रकों के खिलाफ गुरुवार की रात आईपीएस चिराग जैन ने पुलिस टीम के साथ पकड़ना शुरू किया तो हड़कम्प मच गया । थाना प्रभारी आईपीएस चिराग जैन ने बताया कि रात में कुल पांच ट्रकों को पकड़ा गया।सभी ट्रक ओवर लोड थे । और साथ ही साथ खनन परिवहन करने का कोई प्रपत्र भी चालक नहीं दिखा सके ।जिससे प्रथम दृष्टया थाने में सीज कर दिया गया।और अन्य कार्रवाई के लिए खनन व परिवहन विभाग को भी रिपोर्ट भेजी गई है ।

रस्तीपुर गांव में घर के बाहर से बोलेरो गायब

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत जंघई बरना मार्ग पर स्थित रस्तीपुर चौराहे के पूरब सड़क के बगल भानू गुप्ता का मकान है।रोज की तरह भानू ने घर के बाहर अपनी बोलेरो गाड़ी गुरुवार की रात को भी खड़ी कर दिया था।रात में करीब 1 बजे भानू गुप्ता को बोलेरो स्टार्ट होने की आवाज सुनाई पड़ी लेकिन वह यह सोचकर नहीं उठे कि बेटा गाड़ी कहीं भाड़े पर ले जा रहा होगा। सुबह जब पिता पुत्र उठे तो गाड़ी घर के सामने से गायब मिली दोनों हक्का-बक्का हो गये जंघई पुलिस चौकी पर प्रार्थना पत्र दिया मौके पर पहुंची पुलिस ने मुआयना किया और चली गई बोलेरो गायब होने से गुप्ता परिवार काफी सदमे में हैं क्योंकि बोलेरो गाड़ी से ही उनका जीवकोपार्जन चलता था।

पत्रकार को जान से मारने की धमकी देने वाले ग्राम प्रधान के विरुद्ध दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

कौंधियारा। प्रयागराज जनपद के कौंधियारा विकास खंड के अंतर्गत आने वाली ग्राम सभा नौगवां में खबर कवरेज करने गए पत्रकारों के साथ ग्राम प्रधान ने की अभद्रता और दी जान से मारने की धमकी। अगर देखा जाए तो ग्राम प्रधान के द्वारा जहां गांव में विकास कार्यों को मनरेगा मजदूरों से कार्य न कराकर के जेसीबी से कार्य कराया जा रहा था। जिसकी खबर कवरेज करने पहुंचे क्षेत्रीय पत्रकार वैभव यादव अपने सहयोगी पत्रकार साथियों के साथ जैसे ही गांव में पहुंचे और चल रही जेसीबी की वीडियो जब बनाना शुरू किया, तो वहां मौजूद ग्राम प्रधान ने उक्त सभी पत्रकार साथियों के साथ गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी। वहीं पत्रकार के साथ मौजूद कुछ अन्य लोग भी पत्रकारों के साथ अभद्रता करने लगे पीड़ित पत्रकार के द्वारा जहां इस संदर्भ में कौंधियारा थाने में लिखित शिकायत की गई। जिस पर थाना प्रभारी कौधियारा के आदेश पर पत्रकारों की शिकायत को ध्यान में रखते हुए ग्राम प्रधान नौगवां मानिकचंद यादव के विरुद्ध अभियोग पंजीकृत किया गया। जिसमें मुकदमा अपराध संख्या 73/022 धारा 323 504 506 आईपीसी के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया। वहीं अगर देखा जाए तो इसके पहले भी ग्राम प्रधान के द्वारा अन्य पत्रकारों से भी इसी प्रकार की अभद्रता की जा चुकी है। वहीं ग्राम प्रधान एक राजनीतिक पार्टी से प्रेरित होने के कारण वर्तमान सरकार की नीतियों को गलत बताते हुए उल्टे पत्रकारों पर ही आरोप लगाना शुरू कर देते हैं। अगर देखा जाए तो ग्राम प्रधान के द्वारा ग्राम सभा में कराए जा रहे विकास कार्यों की ग्रामीण ही शिकायत करते हैं।

जिस पर पत्रकार खबर कवरेज करने जब गांव में पहुंचते हैं तो पत्रकारों के साथ प्रधान व प्रधान के चमचे गाली गलौज व मारपीट पर आमादा हो जाते हैं। वही इस संदर्भ में प्रधान संघ कौंधियारा के प्रधानसंघ के अध्यक्ष से भी बातचीत की गई तो उनके द्वारा ग्राम प्रधान के द्वारा पत्रकारों के साथ की गई अभद्रता को लेकर ग्राम प्रधान को ही दोषी माना।

खबर संक्षेप

मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रयागराज के निरीक्षण के दौरान कर्मचारी पाये गये अनुपस्थित

प्रयागराज। सोरांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का बड़ा खेल देखने को मिला जहां अधिकारियों को पैसा देकर कर्मचारियों को अनुपस्थित की जगह उपस्थित दिखाया जाता है,जब मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने सोरांव समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का औचक निरीक्षण किया गया तो सारे कर्मचारी नदारद मिले वहीं मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने अनुपस्थित कर्मचारियों का वेतन रोकने के साथ नोटिस जारी किया, इसके बाद कई अनुपस्थित कर्मचारियों को दिखाया गया उपस्थित, सोरांव समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के सभी कर्मचारीयों में हड़कंप मचा हुआ है, विभाग द्वारा अपनाया जा रहा है नया नियम जहां पैसा देकर कर्मचारियों की गैर हाजिरी की जगह हाजिरी दर्ज की जा रही है अब देखना ये है कि योगी सरकार में ऐसे कर्मचारियों के खिलाफ क्या कार्रवाई होती है।

मना करने के बाद भी बात करता था बहन से, मार दी गोली

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सराय इनायत थाना क्षेत्र के पालीकरनपुर गांव में दरोगा बाबूचंद्र यादव के बेटे आशीष की हत्या प्रेम प्रसंग में हुई थी। पुलिस ने शुक्रवार को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसने गुनाह कुबूल करते हुए बताया कि परिवार की एक लड़की से आशीष बात करता था। उसे बहुत समझाया, घर में शिकायत भी की लेकिन वह नहीं माना। इसी कारण उसे गोली मार दी। पलानीपुर के रहने वाले दरोगा बाबूचंद्र यादव के बेटे आशीष यादव की चार अप्रैल को गांव में ही गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। घर वालों ने प्रधानी के चुनाव की रंजिश का मामला बताते हुए संतोष यादव, पवन कुमार, मिथिलेश यादव, तारावती, शुभम, नन्हें तिवारी उर्फ राजगुरु तिवारी, आजाद तिवारी, राजेश तिवारी और राजा बाबू तिवारी को नामजद कराया था पुलिस ने जब जांच शुरू की तो मामला कुछ और ही सामने आया। गांव वालों ने भी दबी जुबान में पुलिस को कुछ जानकारी दी तो राजगुरु तिवारी उर्फ नन्हें को तेंदुई

पुलिस के गिरफ्त में शातिर अपराधी

चैनपुर मार्ग से गिरफ्तार कर लिया गया। नन्हें तिवारी ने जुर्म कुबूल करते हुए बताया कि आशीष उसके परिवार की एक लड़की से बात करता था। जब चारों ओर इस बारे में बात होने लगी उसने आशीष को समझाया लेकिन वह नहीं माना।उसके घर में भी शिकायत की लेकिन वह किसी भी सूरत में मानने को तैयार नहीं था। परिवार की बदनामी के कारण उसने गोली मार दी। नन्हें तिवारी को आज ही जेल भेज दिया गया। पुलिस के मुताबिक अन्य आरोपियों को फिलहाल क्लीन चिट नहीं दी गई है। साक्ष्यों को इकट्ठा किया जा रहा है। साक्ष्यों के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

एंबुलेंस में गूंजी किलकारी जच्चा बच्चा सुरक्षित

मेजा। मेजा क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम झड़ियाही निवासी सतीश कुमार की पत्नी सोनी नौ महीने की गर्भवती थी। जिसको अचानक बीती रात प्रसवपीड़ा सुरु हो गयी। जिससे उसकी स्थिति गंभीर हो गयी। इस पर सतीश कुमार ने तुरंत 102 मे फोन मिलाया कॉल करने के बाद 15 मिनट मे मेजा समुदायिक मे तैनात 102 एम्बुलेंस उनके घर पहुंच कर गर्भवती महिला की स्थिति देखते हुए एम्बुलेंस में तैनात ईमटी सुघर सिंह यादव और पायलट प्रभु दयाल व आशा नीतू देवी ने तुरंत एम्बुलेंस मे गर्भवती महिला को शिफ्ट कराया और प्राथमिक उपचार देते हुए महिला का सुरक्षित प्रसव एम्बुलेंस मे ही कराया। जिससे प्रसव के बाद जच्चा और बच्चा दोनों पूर्ण रूप से स्वस्थ है। साथ ही अन्य उपचार के लिए मेजा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया गर्भवती महिला के परिजनों ने जीवन दायिनी कर्मचारीयों के प्रति आभार व्यक्त जताया।

समानता के संघर्ष का डा.अम्बेडकर मेला का आयोजन 14 अप्रैल को

एसपी क्राइम और एसपी प्रोटोकॉल होंगे अम्बेडकर मेला के बतौर मुख्य अतिथि

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। 14 अप्रैल को बाबासाहेब डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर जी की जयंती के पावन अवसर पर डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा), देवपती मेमोरियल ट्रस्ट। और प्रबुद्ध फाउंडेशन द्वारा बाल कलाकारों व समाजसेवी अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया जायेगा उक्त निर्णय शुक्रवार को दावा और प्रबुद्ध फाउंडेशन के अलोपीबाग स्थित कार्यालय पर प्रबंध कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रबुद्ध फाउंडेशन के प्रबन्धक/ सचिव उच्च न्यायालय के अधिवक्ता रंग निर्देशक रामबृज गौतम ने की। गौतम ने बताया कि सतीश चन्द्र पुलिस अधीक्षक (अपराध) और रवि कुमार निम पुलिस अधीक्षक (प्रोटोकॉल) हाईकोर्ट स्थित डा. अम्बेडकर मूर्ति स्थल पर लगने वाले समानता के संघर्ष का डा. अम्बेडकर मेला - 2022 के बतौर मुख्य अतिथि होंगे तो अपर नगर मजिस्ट्रेट (चतुर्थ) डा. कंचन, डिप्टी कमिश्नर उद्योग संजय कुमार और भूमि संरक्षण अधिकारी गौरव प्रकाश मेले में बतौर विशिष्ट अतिथि अपनी बात रखेंगे।संयुक्त बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ कि अम्बेडकर जयंती के अवसर पर हाईकोर्ट स्थित डा. अम्बेडकर प्रतिमा स्थल पर आयोजित हो रहे डा. अम्बेडकर मेला-2022 में एक ओर जहां डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा) की ओर से जनपद हरदोई में तैनात उद्योग विभाग के डिप्टी कमिश्नर संजय कुमार, प्रयागराज के भूमि संरक्षण अधिकारी गौरव प्रकाश, असि. कमिश्नर वाणिज्य कर केदार नाथ व मिथलेश कुमार, लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता रामस्वरूप, सहायक अभियंता कामिनी कौशल, सहायक अभियंता समरजीता सोनकर, सहायक अभियंता ज्योति प्रकाश सोनकर, सहायक अभियंता विजय कुमार, जूनियर इंजीनियर संतोष चंद्र व जूनियर इंजीनियर मुन्ना कुमार तथा जल निगम के अधिशासी अभियंता नीरज कुमार, सहायक अभियंता ऋषिकेश कुमार, रंजीत कुमार तथा मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज के डा. दिनेश कुमार, डा. कमलेश कुमार सोनकर, डा. अशोक कुमार प्रियदर्शी, व सिविल लाइन डिपो के एआरएम सी. बी. राम और उत्तर मध्य रेलवे के सहायक लेखाकार अमरनाथ को डा. अम्बेडकर समाज सेवा सम्मान-2020 व 2021 दिया जायेगा तो वहीं दूसरी ओर प्रबुद्ध फाउंडेशन की ओर से बहुजन साहित्य कला और संस्कृति के साथ साथ बहुजन रंगमंच के संरक्षण संबर्धन व उसके विकास के साथ साथ उसके पुनरस्थापत्य के लिये सतत कार्य कर रहे बाल कलाकारों में प्रज्ञा गौतम, आंचल, रिया, प्रज्ञा रश्मि गौतम, उन्नति राज, पायल तथा इशान्त, श्रेष्ठ, शशि सिद्धार्थ व हर्षराज को प्रबुद्ध गौतम बाल रंगमंच सम्मान-2020 व 2021 प्रदान किया जाएगा। एक ओर जहां डा. अम्बेडकर समाज सेवा सम्मान-2020 व 2021 के लिये प्रत्येक अधिकारी को अंगवस्त्र व सम्मान पत्र दिया जाएगा तो वही प्रबुद्ध गौतम बाल रंगमंच सम्मान-2020 व 2021 के लिये प्रत्येक बाल कलाकारों को दो-दो हजार रुपये व सम्मान पत्र दिया जाएगा। कोविड-19 जैसी भयंकर महामारी के प्रकोप और लाकडाउन के चलते विगत दो वर्षों का सम्मान एक साथ दिया जाएगा।

बिजली विभाग के अधिशासी अभियंता को ऑफिस में घुसकर पीटा

प्रयागराज। भाजपा एमएलसी सुरेंद्र चौधरी एक बार फिर विवादों में घिर गए हैं। इस बार टैगोर टाउन में बिजली विभाग के अधिशासी अभियंता मनोज अग्रवाल को उनके ही आफिस में घुसकर पीटने का आरोप लगा है। दोनों तरफ से क्रास तहरीर दी गई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

हमने मना किया तो मेरे साथ की मारपीट : अधिशासी अभियंता मनोज अग्रवाल का कहना है कि बिजली विभाग के डायरेक्टर कॉमर्शियल प्रयागराज आए थे। मेंहदौरी में बिजली चोरी रोको अभियान चलाया जाना था। विजिलेंस टीम के अधिकारी भी साथ में थे। अजमा खातून समेत कुल 24 लोगों की बिजली चोरी पकड़ी गई थी। अजमा खातून ने पहले विजिलेंस टीम के अधिकारी के साथ एमएलसी की बात कराई। बाद में उन्होंने मुझसे भी फोन पर बात कराई। मैंने पूछा एमएलसी सुरेंद्र चौधरी का फोन है। मैंने बात की। सुरेंद्र चौधरी ने कहा ये मेरी बहन हैं इनको छोड़ दीजिए। हमने कहा संभव नहीं है। लिखा-पढ़ी हो चुकी है। कुल 24 चोरियां पकड़ी गई हैं। ऐसे में छोड़ना संभव नहीं है। हां, अगर ढाई लाख की बिजली चोरी का 40 % तक जमा करा दें तो कनेक्शन जुड़वा दिया जाएगा।शुक्रवार को अजमा खातून फिर अपने पति के साथ दफ्तर आईं और पूछा कि क्या करना है। हमने एसेसमेंट कराया और 40 % जमा करने को कहा। तभी 10 से 12 लोग दफ्तर में घुस आए और मनोज कौन है मनोज कौन है पूछने लगे। हमने कहा हम हैं मनोज। तभी एमएलसी सुरेंद्र चौधरी ने हमारे साथ मारपीट की।

कार्यालय ग्राम पंचायत थानापुर वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **थानापुर** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 11 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूतिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

विजय लक्ष्मी चंदेल
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत थानापुर
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

अश्वनी कुमार
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. थानापुर
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/2022–23/ दिनांक 08.04.2022

बीपीसीएल कंपनी को बचाने के लिए सांसद ने लगाई भारी उद्योग मंत्री से गुहार

नैनी। इलाहाबाद सांसद के मीडिया प्रभारी अभिषेक शुक्ला ने एक विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इलाहाबाद सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी ने बीपीसीएल बचाओ संघर्ष समिति के पदाधिकारि को आश्वासन दिया है क भी निराश होने की जरूरत नहीं और सांसद जोशी ने भारत के सोची प्रधानमंत्री से मुला किया और और संघर्ष समिति प्रत्यावेदन माननीय प्रधानमंत्री को सौंपा जिस पर प्रधानमंत्री जी ने प्रत्यावेदन को भारी उ मंत्रालय में भेजा है सांसद ज ने भारी उद्योग मंत्री श्री महेंद्र नाथ पांडे जी से 4 दिनों में 2 बार पर वार्ता किया है जिस पर भारी उद्योग मंत्री श्री महेंद्र नाथ पांडे जी ने आश्वासन दिया है कि यदि आज दिनांक 8 अप्रैल 2022 को इलाहाबाद सांसद के मीडिया प्रभारी अभिषेक शुक्ला ने एक उन्होंने मुख्यमंत्री जेसीबी विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इलाहाबाद सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी ने बीपीसीएल बचाओ संघर्ष समिति के पदाधिकारियों को आश्वासन दिया है कि अभी भी निराश होने की जरूरत नहीं है और सांसद जोशी ने भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जी से मुलाकात किया और बीपीसीएल बचाओ संघर्ष समिति का प्रत्यावेदन माननीय प्रधानमंत्री जी को सौंपा जिस पर प्रधानमंत्री जी ने प्रत्यावेदन को भारी उद्योग मंत्रालय में भेजा है सांसद जोशी ने भारी उद्योग मंत्री श्री महेंद्र नाथ पांडे जी से 4 दिनों में 2 बार फोन पर वार्ता किया है जिस पर भारी उद्योग मंत्री श्री महेंद्र नाथ पांडे जी ने आश्वासन दिया है कि यदि उत्तर प्रदेश सरकार कोई प्रस्ताव भेजती है तो निश्चित रूप से उस पर विचार किया जाएगा सांसद जोशी के आग्रह पर श्री महेंद्र नाथ पांडे जी ने उत्तर प्रदेश के भारी उद्योग मंत्री श्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी जी से भी फोन पर वार्ता किया और बताया कि जिस प्रकार से इलाहाबाद सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी बीपीसीएल के लिए दिल्ली में प्रयास कर रही हैं और प्रधानमंत्री कार्यालय से भी एक पत्र उन्हें प्रसारित हुआ है भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्री महेंद्र नाथ पांडे जी भारी उद्योग मंत्री ने उत्तर प्रदेश के भारी उद्योग मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी से कहा कि आप माननीय मुख्यमंत्री जी से वार्ता कर इस संदर्भ में एक प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेजें तब उस पर विचार करने का प्रयास किया जा सकता है इसी संदर्भ में सांसद जोशी ने उत्तर प्रदेश के भारी उद्योग मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी जी को ईमेल के माध्यम से कल दिनांक 9 अप्रैल 2022 को बीपीसीएल बचाओ संघर्ष समिति के प्रतिनिधि मंडल के साथ प्रयागराज में मिलने की बात की है और संभवत कल मंत्री जी से प्रयागराज में मुलाकात होगी साथ ही साथ प्रोफेसर जोशी ने माननीय मुख्यमंत्री जी से भी मिलने का वक्त सोमवार को मांगा है मुख्यमंत्री एवं कैबिनेट मंत्री नंदी जी से मिलकर सांसद जोशी भरपूर प्रयास करेंगी कि अभी भी जिस तरह से एक प्रस्ताव जो उनका है इसमें तीनों बिंदुओं को जोड़कर उसको बेचा जाए जिसमें टेक्नोलॉजी चल और अचल संपत्ति सम्मिलित है तो यह कंपनी बस सकती है क्योंकि यह भारतवर्ष की एकमात्र इस सेक्टर की कंपनी है जो हेवी कंप्रेसर और पंप बनाते हैं और ओएनजीसी तथा न्यूक्लियर प्लांट को भी सप्लाई देते है भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्री ने सांसद जोशी को आश्वस्त किया कि निराश होने की आवश्यकता नहीं है कुछ दिन तक इस पर फैसला अभी नहीं लिया जाएगा इस बीच अगर उत्तर प्रदेश की ओर से वह प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजने में सफल हुई तो इस कंपनी को अभी भी बचाया जा सकेगा सांसद जोशी का अब प्रयास उत्तर प्रदेश की सरकार के साथ हो होगा जिसमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं उत्तर प्रदेश के भारी उद्योग मंत्री के साथ दो-तीन दिनों में मिलकर कंपनी को बचाने का भरपूर प्रयास करेंगी तथा उत्तर प्रदेश सरकार से अनुरोध करेंगी एक प्रस्ताव बनाकर केंद्र सरकार को भेजा जाए जिससे कि इस कंपनी को बचाया जा सकेगा सांसद जोशी ने कहा कि हो सकता है नीलामी की प्रक्रिया आज शुरू हुई हो परंतु नीलामी का परिणाम अभी कुछ दिन तक उस पर फैसला नहीं दिया जाएगा इस बीच उत्तर प्रदेश सरकार प्रस्ताव भेजने में सफल रही तो निश्चित तौर पर यह कंपनी बच जाएगी सांसद जोशी ने कहा मैं निराशावादी नहीं हूं मैं अंत तक संघर्ष करती हूं और इस प्रकरण में भी संघर्ष करती रहूंगी सांसद जोशी ने कहा जल्द ही उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से प्रस्ताव केन्द्र सरकार को जाएगा सांसद जोशी ने कहां कि मुझे अभी भी विश्वास है उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से जो प्रस्ताव जाएगा उसमें वह भारी उद्योग मंत्री जी को मना लेंगी कि वह उस पर सकारात्मक विचार करें।

कार्यालय ग्राम पंचायत उमरी मय टटिहरा वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **उमरी मय टटिहरा** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 3 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूतिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

इन्द्रपति यादव
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत उमरी मय टटिहरा
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

राम बहादुर
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. उमरी मय टटिहरा
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/2022–23/ दिनांक 08.04.2022

कार्यालय ग्राम पंचायत सेमरी वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **सेमरी** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 12 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूतिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

बलवीर सिंह
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत सेमरी
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

राम बहादुर
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. सेमरी
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/2022–23/ दिनांक 08.04.2022

एमएलसी चुनाव के लिये पोलिंग पार्टियां रवाना

आज प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला मतपेटिकाओं में होगा बंद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमएलसी चुनाव के लिये पोलिंग पार्टियां आज शुक्रवार को अफीम कोठी से भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच रवाना की गई। एमएलसी चुनाव में मतदान के लिये ब्लाकों को मतदान स्थल बनाया गया है, जिसमें 2815 मतदाता अपने मतों का प्रयोग शनिवार को करेंगे। आधा दर्जन प्रत्याशियों ने इस बार एमएलसी के लिये नामांकन किया है। इसमें भाजपा से हरिप्रताप सिंह, सपा से विजय यादव व जनसत्ता दल से अक्षय प्रताप सिंह उर्फ गोपाल के बीच कड़ा और दिलचस्प मुकाबला देखने को मिल रहा है। पहली बार राजा भइया के जनसत्ता दल के प्रत्याशी अक्षय प्रताप सिंह को भाजपा व सपा दोनों ही टक्कर दे रहे हैं। इन सबका भाग्य का फैसला शनिवार को मतपेटिका में बंद हो जाएगा। प्रशासन ने मतदान स्थलों की सुरक्षा कड़ी कर दी है। सभी मतदान स्थलों पर देर शाम पोलिंग पार्टियां पहुंच गई हैं। दिन में अफीम कोठी में अधिकारी व कर्मचारी पोलिंग पार्टियों को रवाना करने में व्यस्त दिखाई दिये।

अफीम कोठी से रवाना होती पोलिंग पार्टियां।

मतदान की गोपनीयता भंग होने पर होगी कार्यवाहीः डीएम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि मतदान की गोपनीयता किसी स्तर पर भंग हुई तो सम्बन्धित के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। हर मतदान स्थलों पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था होगी। मतदान की गोपनीयता हर मतदान कर्मी का कर्तव्य है। इस चुनाव में सभी मतदान अधिकारी व कर्मचारी अपनी निष्पक्षता और ईमानदारी का परिचय दें।

कालाकांकर ब्लाक में एमएलसी चुनाव में पडेंगे 151 मत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विधान परिषद चुनाव में ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर में शुक्रवार को कुल 151 मताधिकार का प्रयोग ग्राम प्रधान, बीडीसी व मानिकपुर के सभासद अपने मत का प्रयोग करेंगे। ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर एडीओ पंचायत संतोष कुमार शुक्ला ने बताया कि शुक्रवार को होने वाले एमएलसी चुनाव की तैयारी पूरी कर ली गयी है, जिसमे ब्लाक कालाकांकर के ग्राम प्रधान पुरुष 35 व महिला 27 तथा बीडीसी महिला 28 व पुरुष 49 के साथ मानिकपुर के 12 सभासद अपने अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मतदान सुबह 8 बजे से शाम 4 बजे तक सम्पन्न होगा। ब्लाक मुख्यालय के सभागार कक्ष में सभी तैयारी पूरी कर ली गई है बैरिकेडिंग की ब्यवस्था के साथ एक काउंटर मतदान के लिए बनाया गया है।शांतिपूर्ण व निष्पक्ष मतदान के लिए सुरक्षा ब्यवस्था चाक चैबंद कर दी गई है। सभी तैयारी पूरी होने पर खण्ड विकास अधिकारी कालाकांकर अर्पणा सैनी व एडीओ आई एस बी यू0 बी0 सिंह ने सभागार कक्ष की व्यवस्था का निरीक्षण किया।

आत्महत्या के लिये उकसाने पर तीन आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा

70-70 हजार रुपये का लगा अर्थदण्ड

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जनपद न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश (पाक्सो एक्ट) पंकज कुमार श्रीवास्तव ने आत्महत्या के लिए उकसाने, छेड़खानी, जान से मारने तथा पाक्सो एक्ट में दोषी पाते हुए गुन्नू तिवारी उर्फ नितिन तिवारी निवासी ढिंगवस थाना लालगंज, डब्बू सिंह उर्फ जितेंद्र प्रताप सिंह, गुड्डू उर्फ नागेंद्र सिंह निवासी ग्राम पुंवासी थाना बाघराय को दोषी पाते हुए पाते हुए प्रत्येक को आजीवन कारावास तथा 70-70 हजार रुपए अर्थदंड से दंडित किया।

वादी मुकदमा के अनुसार गुन्नू तिवारी, जितेंद्र सिंह नागेंद्र सिंह मेरी बेटी को परेशान करते थे। पीडिता के साथ छेड़खानी भी करते थे। जब वह इन चीजों का विरोध करती थी तो उसे जान से मारने की धमकी देते थे यह सारी बातें मेरी लड़की पीडिता ने मुझे बताया था और इसी छेड़खानी से परेशान होकर उसने अपनी बेटी का स्कूल जाना भी बन्द कर दिया जब मैंने इसकी शिकायत अभियुक्त गणों से की तो उन्होंने मुझे धमकी दी थी कि अभी एक ही बेटी पर बंद नियत है ज्यादा पैरवी करोगी तो दूसरे का भी जीवन बेकार कर देंगे। घटना 12 अक्टूबर 2020 को रात लगभग 12 बजे गुन्नू तिवारी मेरे घर में घुस गया और गलत काम करने की नियत से मेरी लड़की पीड़िता को पकड़ा वह चिल्लाई और शोर मचाए तब हम लोग सुनकर दौड़े तो देखा कि गुन्नू तिवारी घर से निकल रहे थे। डब्बू और नागेन्द्र घर के सामने खड़े थे अगले 13 अक्टूबर 2020 को सुबह 8 बजे तीनों ने मेरी लड़की को उठा ले जाने की बात कह कर घर देर लिये। हम पति-पत्नी अपने बच्चों सहित घर से निकल कर भाग गए और भागकर पुराने घर पहुंच गए। वे भी वहाँ आ गये और हम लोगों को जान से मारने की धमकी देने लगे। मेरी बेटी को कुकर्म करने के लिए खीचकर ले जाने लगे तब मेरी बेटी अपने को बचाने हेतु मजबूर होकर सामने पड़े कुएं में कूदकर जान दे दी। राज्य की ओर से पैरवी एडीजीसी निर्भय सिंह ने की।

सप्तमी पर मां की आराधना करने वालों का रहा रेला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नवरात्र में अब केवल दो दिन बचे हैं। ज्यादातर लोग देवी मंदिरों में माता रानी की पूजा अर्चना के अलावा घरों में भी मां की आराधना कर रहे हैं। शहर के बेल्हा देवी मंदिर में मां के दर्शन के साथ मनौती पूर्ण होने पर कराही भी धाम में चढ़ाई जा रही है। इसके अलावा मुण्डन आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न कराये जा रहे हैं। दिन में तेज धूप होने से मंदिर में भीड़ थोड़ा घट जाती है लेकिन सुबह पांच बजे से लेकर और शाम पांच बजे से लेकर दस बजे रात तक श्रद्धालुओं का रेला दिखाई पड़ता है।

कार्यालय ग्राम पंचायत जगदेवपुर बरेठी वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **जगदेवपुर बरेठी** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 02 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत हैः–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें:– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

सुभाष चन्द्र मिश्रा
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत जगदेवपुर बरेठी
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/2022-23/ दिनांक 08.04.2022

अश्वनी कुमार
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. जगदेवपुर बरेठी
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

गोशाला के पशुओं के लिये नपा मण्डी समिति में रखेगी सब्जी दान पेटिका

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका के बराछा स्थित गोशाला में हरे चारे की समस्या से निपटने के लिये मण्डलायुक्त के निर्देश पर महुली मण्डी में लगने वाली सब्जी मण्डी की बची सब्जियों को कम दाम पर खरीदने तथा सब्जी के बड़े व्यवसायियों द्वारा बची सब्जियों को गोशाला के लिये दान देने पर चर्चा हुई। नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह एवं आरआई लाल बहादुर सिंह ने मण्डी समिति जाकर वहां के अधिकारियों व आढ़तियों से मिलकर इस समस्या को सुलझाने में उनका सहयोग मांगा। मण्डी समिति में हुई बैठक में मण्डी सचिव रमेश चंद्र पाण्डेय, मण्डी इंस्पेक्टर विजय शंकर मिश्र व सालिकराम, आढ़ती रमेश गुप्ता व रमजान अली, जिला पंचायत सदस्य मोहित उर्फ ऋषिजीत सिंह तथा महुली के सभासद दीपक भी मौजूद रहे। बता दें कि मण्डलायुक्त ने पिछले दिनों प्रतापगढ़ आगमन पर गोशाला के निरीक्षण में पशुओं को हरा चारा दिये जाने की आवश्कता बताई थी। उनके जाने के बाद नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने नगर पालिका के दो प्रतिनिधियों संतोष कुमार सिंह व लाल बहादुर सिंह को भेजकर मण्डी समिति के अधिकारियों से वार्ता कराया। बता दें कि नगरीय गोशाला होने के कारण पशुओं को इस भीषण गर्मी में हरा चारा नहीं मिल पा रहा था। इसके लिये मण्डलायुक्त के निर्देश पर अब बची हरी सब्जियों को पशुओं को खिलाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिये जल्दी ही ईओ के निर्देश पर नगर पालिका महुली स्थित मण्डी समिति में एक सब्जी दान पात्र रखेगी, जिसमें बडे. व्यापारी बची सब्जियों को गोशाला के लिये दान भी कर सकेंगे। नगर पालिका के इस प्रयास से अब जल्दी ही गोशाला के लिये हरी सब्जियां उपलब्ध होने की आशा बढ़ गई है।

मण्डलायुक्त के निर्देश पर पशुओं को हरी सब्जी खिलाने की कवायद

मण्डी समिति में बैठक करते नगर पालिका व मण्डी समिति के अधिकारीगण।

एंबुलेंस में हुआ सुरक्षित प्रसव, महिला ने दिया बेटी को जन्म

पट्टी, प्रतापगढ़। शुक्रवार को पट्टी तहसील स्थित सेठ पन्नालाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचने से पहले एक महिला ने एक बेटी को एंबुलेंस में जन्म दिया दोनों सुरक्षित है। आशा बहुत था मेडिकल टेक्नीशियन की सूझबूझ से सुरक्षित प्रसव हुआ एंबुलेंस में किलकारी गूंज उठी। पट्टी तहसील क्षेत्र के गजरिया गांव की रहने वाली ज्योति पत्नी मनोज को गुरुवार की देर रात प्रसव पीड़ा हुई, जिसके बाद आशा रेनू मिश्रा ने एंबुलेंस बुलाकर शुक्रवार की भोर में सेठ पन्नालाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के लिए चल रही है। पट्टी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचने से पहले ही ज्योति को प्रसव पीड़ा बहुत अधिक हो गई उसके बाद ड्राइवर सोनू कुमार गौड़ ने एंबुलेंस को एक किनारे लगाया मेडिकल टेक्नीशियन हरीश गुप्ता तथा आशा रेनू मिश्रा की सूझबूझ महिला ने बेटी को जन्म दिया। जिसके बाद जच्चा और बच्चा को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया।

कार्यालय ग्राम पंचायत देवनहरी वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **देवनहरी** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 4 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत हैः–

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग–अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें:– 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

प्रेमा देवी
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत देवनहरी
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/2022-23/ दिनांक 08.04.2022

राम बहादुर
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. देवनहरी
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

बढ़ रही मंहगाई आर्थिक प्रगति व विकास के लिए खतरा: प्रमोद तिवारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य एवं यूपी आउटरीच एण्ड को-आर्डिनेशन कमेटी के प्रभारी प्रमोद तिवारी ने बेतहासा बढ़ रही मंहगाई को देश की आर्थिक प्रगति व विकास सूचकांक के क्षेत्र में गहरे प्रतिकूल प्रभाव को चिंताजनक कहा है। प्रमोद तिवारी ने कहा कि मोदी सरकार के आर्थिक प्रबंधन तथा मंहगाई नियंत्रण में असामंजस्य के चलते सेसेंक्स में लगातार तीसरे दिन गिरावट तथा पेट्रोल, डीजल के दामों में इतिहास में सबसे बड़ी बढ़ोत्तरी के चलते आर्थिक बबार्दी व तबाही बेहद खतरनाक स्थिति का परिचायक हो उठी है।

शुक्रवार को रामपुर खास के एक दिवसीय दौरे पर पहुंचे प्रमोद तिवारी मीडिया से रूबरू होते हुए कहा कि अभी तक विपक्ष अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में जो चिंता व्यक्त कर रहा था। अब भारतीय रिजर्व बैंक ने भी यह स्वीकार करते हुए घोषणा कर दी है कि देश का ग्रोथ रेट यानि विकास दर कम हो रहा है। बकौल प्रमोद तिवारी भारतीय रिजर्व बैंक ने हालात को देखते हुए असाधारण कदम उठाते हुए जीडीपी के अनुमानित दर स्वयं घटा ली है। प्रमोद तिवारी ने कहा कि इससे भारतीय रिजर्व बैंक तक ने यह स्वीकार कर लिया है कि देश के जो आर्थिक हालात है और सरकार का स्वयं घोषित लक्ष्य है, उसे हम स्वयं और देश पूरा नहीं कर पा रहा है। सीडब्लूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने कहा कि यह अत्यंत सोचनीय, दुर्भाग्यपूर्ण और अर्थ व्यवस्था की बबार्दी की कहानी है। जिसके चलते मंहगाई और बढ़ेगी तथा रोजगार कम होगा और पूंजी निवेश भी घटेगा। प्रेसवार्ता में मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, आशीष उपाध्याय, ददन सिंह, छोटे सिंह, सत्येन्द्र सिंह, रामचन्द्र तिवारी, पप्पू तिवारी, छोटेलाल सरोज, कुंवर ज्ञानेन्द्र सिंह, केडी मिश्र आदि रहे।

उत्पीड़न पर भी सरकार पर हमलावर हुए सीडब्लूसी मेंबर

प्रमोद तिवारी।

ट्राली से मिट्टी गिराकर विधवा महिला के घर की जलनिकासी किया बंद

घर में जमा हुआ पानी, महिला ने दी थाने में तहरीर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। विधवा महिला के घर का जल निकासी का रास्ता पति की पहली पत्नी के बेटे ने बंद कर दिया, जिससे महिला के घर में जलजमाव हो गया पानी न निकल पाने से उसे दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। वहीं आरोपी उसे लगातार जान से मारने की धमकी दे रहे हैं।

पीड़ित महिला ने इस संबंध में कंधई थाने में तहरीर देकर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पट्टी तहसील क्षेत्र के कंधई थाना अंतर्गत सरखेलपुर गांव की रहने वाली आसमा बेगम विधवा है।

उसके पति इसरार की मौत बहुत पहले हो चुकी है। कंधई थाने में तहरीर में आसमा बेगम ने बताया कि उसके घर के चारों तरफ उसके पति की पहली पत्नी के बेटे ने ट्राली से मिट्टी गिरा कर उसके घर की जल निकासी को बंद कर दिया है, उसके घर में पानी भरा हुआ है और वहां से निकलने में उसे परेशानी हो रही है। पीड़ित महिला का आरोप है कि आरोपी युवक के ननिहाल से भी लोग आकर उसे गाली देते हैं जिससे उसका जीना दूभर हो चुका है। उसने बताया कि घर में पानी जमा होने से उसका सारा सामान भी खराब हो रहा है लेकिन कोई भी उसकी मदद नहीं कर रहा है। परेशान होकर पीड़ित महिला ने थाने में शिकायत ही पत्र देकर आरोपी के खिलाफ नामजद तहरीर दिया है।

मंदिर पर अवैध कब्जे को रोके जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली के भुपियामऊ स्थित गौरी शंकर धाम मंदिर के पुजारी टोनी बाबा ने जिलाधिकारी को पत्र लिखकर ग्राम पंचायत भुपियामऊ चैराहा पर स्थित गौरी शंकर धाम मंदिर व सरकारी भूमि पर किये जा रहे अवैध कब्जे को तत्काल प्रभाव से रोके जाने की मांग की है। टोनी बाबा का कहना है कि उक्त सरकारी भूमि व मंदिर की भूमि पर अवैध ढंग से आरोपियों द्वारा कब्जा किया जा रहा है जिससे लोगों में आक्रोश है। उन्होंने भूमाफियाओं के खिलाफ वैधानिक कार्यवाही की मांग की है।

खबर संक्षेप

सरकारी स्कूल के समय में हुआ परिवर्तन

भरवारी कौशांबी। भीषण गर्मी को देखते हुए डीएम के निर्देश पर बीएसए ने पत्र जारी कर सूचित किया है कि समस्त परिषदीय विद्यालय सहायता प्राप्त विद्यालय मान्यता प्राप्त विद्यालय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं अन्य बोर्ड से कक्षा एक से कक्षा 8 तक के विद्यालय के संचालन के समय में परिवर्तन किया जाता है। उन्होंने निर्देशित किया है कि सुबह 8:00 बजे से 2:00 बजे तक चलने वाले विद्यालय में परिवर्तन कर सुबह 7:30 बजे से 12:30 बजे तक विद्यालय का संचालन किया जाएगा।

परीक्षा देने गई बालिका युवक के साथ भागी

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के मेड़ीपुर मडूकी गांव की एक बालिका यूपी बोर्ड की हाईस्कूल की परीक्षा देने 4 अप्रैल को सुबह घर से गई थी लेकिन बोर्ड परीक्षा खत्म होने के बाद बालिका घर नहीं पहुंची जिस पर परिजनों ने उसे खोजना शुरू किया जानकारी मिली कि गांव के ही एक अन्य लड़के के साथ बालिका बोर्ड परीक्षा केंद्र से चली गई है बालिका के पिता ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि युवक बालिका को बहला-फुसलाकर भगा ले गया है।

ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक चालक की मौत साथी गंभीर घायल

अखंड भारत संदेश

मजदूरी करने कोटिया गांव जा रहे थे बाइक सवार

दुर्घटना के बाद रोते बिलखते परिजन

मनौरी कौशाम्बी। सराय अकिल थानांतर्गत डहिया ग्राम के सामने एक ट्रैक्टर ने बाइक सवार को रौंद दिया जिसमे बाइक चालक एक ब्यक्ति की मौके पर मौत हो गई और दूसरा बाइक सवार बालक गंभीर रूप से घायल हो गया। घटनाक्रम के अनुसार राजेन्द्र सिंह पटेल उम्र लगभग 35 वर्ष पुत्र हरिश्चंद्र पटेल ग्राम तरनी सराय अकिल अपने साथी विमलेश पटेल उम्र 15 वर्ष पुत्र राम बदन सिंह निवासी तरनी सराय अकिल के साथ रोज की भांति मजदूरी करने बाइक से कोटिया जा रहे थे जैसे ही बाइक सवार डहिया के पास पहुँचे पीछे से आ रहे ट्रेक्टर चालक ने बाइक सवारो को रौंद दिया हादसे में बाइक चालक राजेन्द्र सिंह की मौके पर ही मौत हो गई और पीछे बैठा विमलेश का एक हाथ और एक पैर फैक्चर हो गया। हादसा देखकर आसपास के किसान मजदूर और राहगीर घटनास्थल पर रुक जाए गस्त पर जा रही डायल 112 संख्या ढफ्श 1204 में सवार भोला सिंह दरोगा व साथियो ने घायल विमलेश को अपनी गाड़ी से सीएचसी सराय अकिल पहुचाया लेकिन विमलेश की गंभीर हालत होने पर चिकित्सको ने उसे जिला हॉस्पिटल मंझनपुर एम्बुलेंस से भेज दिया गया तथा घटना की सूचना सराय अकिल थाना पहुचाया। घटना की सूचना पर सराय अकिल थानाध्यक्ष हमराहियों के साथ मौके पर पहुचे और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटना की जानकारी मिलते ही रोते बिलखते परिजन घटनास्थल पर पहुंच गए हैं।

पुलिस कप्तान से मिला पत्रकारों का प्रतिनिधिमंडल

कौशांबी। सराय अकिल थाने में महिला सिपाही की अनुशासनहीनता पर खबर प्रकाशित करने के बाद पत्रकार नारायण देव तिवारी के विरुद्ध सराय अकिल थानेदार ने साजिश रच कर मुकदमा दर्ज कर दिया है पत्रकार पर मुकदमा दर्ज किए जाने की जानकारी मिलने के बाद पत्रकारों ने जनपद मुख्यालय मंझनपुर में बैठक कर रणनीति बनाई कौशांबी न्यूज रिपोर्टर क्लब की बैठक जिलाध्यक्ष मोअज्जम खान के नेतृत्व में हुई और भारतीय पत्रकार संघ की बैठक राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुशील केसरवानी के नेतृत्व में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि महिला सिपाही की अनुशासनहीनता पर खबर प्रकाशित करने वाले पत्रकार पर मुकदमा दर्ज कराया जाना पत्रकारिता का हनन है इस मौके पर पत्रकारों ने कहा कि अभिव्यक्ति की आजादी प्रेस की स्वतंत्रता पर हमला बर्दाश्त नहीं किया जाएगा बैठक के बाद पत्रकारों का प्रतिनिधिमंडल वरिष्ठ पत्रकार रामबदन भार्गव के नेतृत्व में पुलिस अधीक्षक से मिला और उन्हें संपूर्ण जानकारी देते हुए फर्जी तरीके से पत्रकार के ऊपर दर्ज मुकदमे को समाप्त कराए जाने की मांग की है इस मौके पर राम मदन भार्गव सुशील केसरवानी पवन कुमार मिश्रा नारायण देव तिवारी प्रमोद मिश्रा सहित तमाम पत्रकार मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

मिठाई की दुकान में लगी आग जलकर खाक

कौशाम्बी। महेवाघाट थानाक्षेत्र के बैरागीपुर चौराहा पर बीती रात सड़क किनारे रखी मिठाई के गोमती दुकान में आग लग गई है आग लगने से दुकान का सामान जलकर खाक हो गया है आग कैसे लगी है यह क्लियर नहीं हो सका है आशंका जताई जा रही है कि व्यवसायिक कंपटीशन में दुकान में आग लगाई गई है। जानकारी के मुताबिक महेवा घाट थाना क्षेत्र के बैरागी पुर चौराहे पर भोला गुप्ता ने गोमती में मिठाई की दुकान खोल रक्खी है रात 9:00 बजे लगभग भोला गुप्ता ने दुकान बंद कर दी थी दुकान बंद करने के बाद उनकी गोमती में आग लग गई है जो पूरी तरह जलकर खाक हो गई है गुरुवार की आधी रात को गोमती दुकान में आग लग जाने से पूरा सामान जलकर खाक हो गया है लकड़ी की गुमटी समेत मिठाई खोया, मोबाइल व नकदी के साथ-साथ जरूरी दस्तावेज भी अग्निकांड की घटना में जलकर खाक हो गए हैं मामले की जानकारी मिलते ही दुकानदार परेशान हो उठा है दुकान में आग कैसे लगी है यह पुलिस की जांच का विषय है।

महिला थानेदार ने चलाया महिला जागरूकता अभियान

अनजान व्यक्ति पर संदेह होने पर तत्काल पुलिस को करे फोन

कौशाम्बी। मिशन शक्ति योजना के तहत महिलाओं बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से महिला थानेदार ने मंझनपुर में जागरूकता कार्यक्रम चलाया है इस कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को सशक्तिकरण किए जाने के संबंध में जानकारी दी गई है। नारी सुरक्षा नारी सम्मान नारी स्वावलंबन के लिए चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान के तहत शुक्रवार को प्रभारी महिला थानेदार द्वारा दुर्गा मंदिर मंझनपुर कस्बा आदि विभिन्न स्थानों पर छात्राओ महिलाओ को जागरूक किया गया साथ ही सुरक्षा सम्मान के लिए जारी किए गए विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरो 112 1090 1076 1073 की जानकारी दी गई महिला जागरूकता कार्यक्रम में महिला थानेदार ने कहा कि किसी अनजान व्यक्ति पर किसी प्रकार का संदेह होने पर मोबाइल नंबरों पर फोन करके सूचना दे सकती हैं साथ ही उपस्थित महिलाओ को टेम्पलेट वितरित किया

तीन वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार : कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा तीन वारंटी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी के पश्चात उनको न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना मंझनपुर बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त चन्दन लाल पुत्र देवीदीन निवासी देखर थाना मझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया हैं। इसी प्रकार थाना करारी पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त सतीश चन्द्र वर्मा पुत्र वंसी लाल निवासी साहजीपुर थाना थरवई जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना सरायअकिल पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त अनवार अहमद पुत्र तसौवर अली निवासी घोसिया थाना सराय अकील को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया हैं।

अवैध वसूली में लिप्त चार पुलिसकर्मी निलंबित

होमगार्ड को निलंबित करने के लिए विभाग को पुलिस अधीक्षक ने लिखा पत्र

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। अवैध वसूली में लिप्त पुलिसकर्मियों की बार-बार शिकायत मिल रही थी इसी बीच पुलिस कर्मियों की अवैध वसूली का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल होने लगा पुलिसकर्मियों के वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस अधीक्षक ने वसूली में लिप्त चार पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है अवैध वसूली में लिप्त एक होमगार्ड को निलंबित करने के लिए पुलिस अधीक्षक ने विभाग को पत्र लिखा है। बीते दिनों थाना कोखराज क्षेत्र अंतर्गत डायल 112 पुलिस द्वारा बालू लदे ट्रक से अवैध वसूली का वीडियो वायरल हुआ था। जिसके संबंध में पीआरबी 1201 में नियुक्त 01 हेड कांस्टेबल औरंगजेब खां ढठड- 860894085 व 02- महिला कांस्टेबल संगीता ढठड-182440595 03-महिला कांस्टेबल सुयंका ढठड-192440703 को पुलिस अधीक्षक द्वारा निलंबित कर दिया गया है तथा होमगार्ड मनोज मिश्र -0895 चालक के खिलाफ कार्यवाही हेतु होमगार्ड कमाण्डेन्ट को रिपोर्ट प्रेषित किया गया है। इसी तरह थाना मोहब्बतपुर पइंसा के उदहिन चौकी पुलिस द्वारा बालू लदे ट्रक से अवैध वसूली का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। जिसके संबंध में कांस्टेबल मनोज कुमार ढठड-192442943 को पुलिस अधीक्षक द्वारा निलंबित कर दिया गया है।

निर्माणाधीन कार्यो को तेजी से पूर्ण कराने के डीएम ने दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

डीएम ने की शासन की विकास प्राथमिकता कार्यक्रमों की समीक्षा, कार्य में लापरवाही बरतने पर सहायक अभियन्ता एमआई को प्रतिकूल प्रविष्टि देने के निर्देश

बैठक करते जिलाधिकारी

कौशाम्बी। शासन की विकास प्राथमिकता कार्यक्रमों की विभागवार प्रगति की विस्तृत समीक्षा बैठक जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा सरस हाल विकास भवन में की गई जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को आईजीआरएस के तहत प्राप्त शिकायतों का निस्तारण समयान्तर्गत एवं गुणवत्तापूर्ण करने के निर्देश दिये इसके साथ उन्होंने सभी अधिकारियों से उनके विभाग से सम्बन्धित सरकारी जमीनों पर हुए अवैध कब्जों की सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये उन्होनें निर्माण कार्यों की विस्तृत समीक्षा के दौरान सभी कार्यदायी संस्थाओं को निमार्णाधीन कार्यो को तेजी से पूर्ण कराने के निर्देश देते हुए गुणवत्ता की जॉच हेतु ठीम गठित कर सत्यापन कराने के भी निर्देश दिये उन्होंने जिला विकास अधिकारी को प्रत्येक माह जल निगम की बैठक कर कार्यो की समीक्षा करने के निर्देश दिये जिलाधिकारी ने कार्य में लापरवाही बरतने पर सहायक अभियन्ता एमआई को प्रतिकूल प्रविष्टि देने के निर्देश दिये उन्होंने अधिशासी अभियन्ता विद्युत को समयान्तर्गत ट्रांसफार्मर बदलने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होनें अधिशासी अभियन्ता सिचाई को निर्देश दिये कि नहर कटने की शिकायत आने पर तत्काल ठीक कराना सुनिश्चित किया जाय। उन्होनें मुख्य पशु चिकित्साधिकारी को गौशालाओं में संरक्षित सभी गौवंशों की शत-प्रतिशत ईयर टैगिंग सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये जिलाधिकारी ने खराब हैण्ड पम्पों की तत्काल रिबोर आदि ठीक कराने के निर्देश जिला पंचायतराज अधिकारी को दिये उन्होनें आपरेशन कायाकल्प के तहत कराये जा रहे कार्यो को तेजी से पूर्ण कराने के निर्देश दिये। उन्होनें कन्या सुमंगला योजना प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण राष्ट्रीय ग्रामीण अजीविका मिशन मुख्यमत्री युवा स्वरोजगार योजना ओडीओपी एवं प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन योजना आदि की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की बैठक में परियोजना निदेशक जनार्दन सिंह जिला विकास अधिकारी विजय कुमार मुख्य चिकित्साधिकारी केसी राय एवं जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी श्रवण कुमार सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मेहता कॉलेज का शुरू हुआ छात्रावास

अखंड भारत संदेश

कोरोना के चलते कॉलेज में चल रहे छात्रावास को बंद कर दिया गया था

भवन्स मेहता के छात्रावास के छात्र

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता विद्याश्रम में क्लास एक से लेकर बारहवीं क्लास तक के काफी दिनों से बंद पड़े छात्रावास को आज कॉलेज के प्राचार्य संजय कुमार श्रीवास्तव द्वारा नवागंतुक बच्चो का तिलक व उपहार देकर पुनः चालू कर दिया गया जिससे बच्चो के अभिभावकों में खुशी की लहर दौड़ गयी है।

आपको बता दे कि जनपद कौशाम्बी का एक मात्र ऐसा कॉलेज है जहाँ पर केजी से लेकर 12वी तक के क्लास के बच्चो को बेहतरीन शिक्षा देने के लिए बेहद अनुभवी व गुणवत्ता पूरक शिक्षकों द्वारा बच्चो को पढ़ाया जाता है जिसके चलते जनपद कौशाम्बी में एक मात्र इंग्लिश मीडियम एवम भवन्स मेहता विद्यालय के नाम से जाना जाता है । इतना ही नही यह कॉलेज अनोखा किस्म का बच्चो के लिए बहुत बड़े छात्रावास की भी सुविधा से परिपूर्ण है जहाँ पर केरल उड़ीसा व आसाम तथा उत्तर प्रदेश सहित कई अन्य प्रान्तों के बच्चे छात्रावास में रहकर अपनी पढ़ाई किया करते थे। आज प्राचार्य संजय श्रीवास्तव द्वारा छात्रावास का प्रवेश करते हुए छात्रों को तिलक लगाते हुए उपहार स्वरूप प्रदान किया जिससे बच्चो के अभिभावकों में काफी खुशी है जबसे वैश्विक महामारी के चलते सरकार की गाइडलाइन का पालन करते हुए छात्रावास को बंद कर दिया गया था आज जैसे ही छात्रावास खुलने की जानकारी लोगो को हुई लोग अपने अपने बच्चो का दाखिला कराने पहुचने लगे लोगो ने इस कार्य की सराहना की।

रोजगार परक कार्यक्रम में उपस्थित लोग

भवन्स मेहता डिग्री कॉलेज में रोजगार परक कार्यक्रम के अंतर्गत विषयों पर दिया व्याख्यान

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद अंतर्गत कस्बा भरवारी में भवन्स मेहता महाविद्यालय में आज मत्स्य पालन विभग्ग के अधिकारी आशीष कुमार श्रीवास्तव वैज्ञानिक पशु अस्पताल महगाव व सुनील कुमार सिंह मत्स्य विभाग मंझनपुर ने कॉलेज के छात्र एवम छात्राओं को रोजगार परक कार्यक्रम के अंतर्गत विषयो पर मत्स्य पालन पर चर्चा करते हुए उसके द्वारा रोजगार और रुपए कमाने के बारे में बताया। इस मौके पर कॉलेज के सभी टीचर्स मौजूद रहे थे ' इससे पहले कॉलेज के प्राचार्य डॉ प्रबोध श्रीवास्तव द्वारा माँ सरस्वती के फोटो पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया ' इस अवसर पर कॉलेज के डॉ विवेक त्रिपाठी डॉ आदिल स डॉ सतीश तिवारी डॉ योगेश मिश्रा डॉ दीपक कुमार डॉ लक्ष्मी कांत मिश्रा डॉ विमलेश यादव डॉ श्रद्धा डॉ उमा डॉ सीछ पी श्रीवास्तव एवम कॉलेज के सैकड़ो छात्र छात्राएं मौजूद रही।

मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना में अब तक 13546 लाभार्थियों को किया गया लाभान्वित

कौशाम्बी। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना मुख्यमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना है। प्रदेश सरकार द्वारा कन्या सुमंगला योजना के अन्तर्गत 6 श्रेणियों में कुल 15000 रुपए की आर्थिक सहायता दिया जा रहा है। जनपद कौशाम्बी में अब तक विभिन्न श्रेणियों के 13546 लाभार्थियों को लाभान्वित किया जा चुका है।महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित कन्या सुमंगला योजना का उद्देश्य-कन्या भ्रूण हत्या को समाप्त करने, समान लैंगिक अनुपात स्थापित करने, बाल विवाह की कुप्रथा को रोकने, बालिका के स्वास्थ्य व शिक्षा को प्रोत्साहन देने एवं स्वावलम्बी बनाना है। इस योजना के अन्तर्गत-बालिका के जन्म लेने के उपरान्त रू0-02 हजार, बालिका के 01 वर्श तक के पूर्ण टीकाकरण के उपरान्त रू0-01 हजार, बालिका के कक्षा-01 में प्रवेश के उपरान्त रू0-02 हजार, कक्षा-06 में प्रवेश के उपरान्त रू0 02 हजार, कक्षा-09 में बालिका के प्रवेश के उपरान्त रू0 03 हजार तथा ऐसी बालिकायें जिन्होंने कक्षा-12वीं उत्तीर्ण कर-के स्नातक अथवा 02 वर्षीय कोर्स में प्रवेश लिया है, उन्हें रू0 05 हजार एक मुश्त आर्थिक सहायता दिये जाने का प्राविधान है।

ससुराली जनों से पीड़ित विवाहिता पहुंची पुलिस अधीक्षक की चौखट

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। ससुराली जनों से प्रताड़ना की शिकार विवाहिता को थाना पुलिस से न्याय नहीं मिला जिस पर विवाहिता पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुची और न्याय की फरियाद की है। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के बिसारा गांव की अनीता देवी यादव की शादी करारी थाना क्षेत्र के बदलेपुर गांव निवासी मनोज कुमार यादव पुत्र बरम दीन के साथ 3 वर्ष पहले हुई थी शादी के बाद से ही अनीता को मनोज कुमार वा हरिश्चंद्र वा शिव चन्द्र पुत्रगण बरम दीन वा बरम दीन ससुर रेखा देवी सास शादी में दहेज कम लाने के लिए आए दिन मारपीट लड़ाई झगड़ा करते हैं। पुलिस अधीक्षक कार्यालय न्याय की आस लेकर पहुंची विवाहिता का आरोप है कि लाखों रुपया का स्त्रीधन सोने चांदी के जेवर सास ससुर ने मिलकर छीन लिया है एक लाख रुपए नगद एक भैंस की बराबर ससुराली जनों द्वारा मांग की जा रही है विवाहिता का कहना है कि मैंने अपने मायके में दहेज की बात बताई तो मेरे मायके के लोगों ने और दहेज देने में असमर्थता जताई है 14 जनवरी 2022 को शाम 4:00 बजे ससुराली जनों ने एक राय होकर के प्रार्थिनी को फिर बेरहमी से मारा पीटा है मेरी हत्या करने की योजना बना रहे थे कह रहे थे कि इसे मार देंगे और लड़के की शादी दूसरी जगह कर देंगे मामले की जानकारी मायके में दी मायके के लोग पहुंचे तो उनके साथ भी गाली गलौज मारपीट किया गया और कहां गया लड़की को जिंदा मार देंगे उसने बताया कि मामले की सूचना 16 जनवरी 2022 को करानी थाने में दिया गया है लेकिन किसी प्रकार के मामले का निस्तारण नहीं हो सका है पुलिस अधीक्षक कार्यालय में शिकायती पत्र देकर विवाहिता ने न्याय की फरियाद की है।

जिला उद्योग बन्धु समिति तथा व्यापार बन्धु की जिलाधिकारी ने की बैठक

उद्यमियो व्यापारियों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित करने के जिला अधिकारी ने दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागर में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ जिला उद्योग बन्धु समिति तथा व्यापार बन्धु की बैठक की गयी बैठक में जिलाधिकारी ने उद्यमियो व्यापारियों की समस्याओं की सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को तत्काल निस्तारित करने के निर्देश दिये जिलाधिकारी ने गत बैठक में प्राप्त प्रकरणों पर लिए गये निर्णय पर की गयी कार्यवाही के अनुपालन की समीक्षा की उन्होने सम्बन्धित विभागो के अधिकारियों को निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों को तत्काल निस्तारित करने के निर्देश दिये। उन्होने नये औद्योगिक आस्थान के निर्माण के सम्बन्ध में क्षेत्रीय प्रबन्धक यूपीएसआईडीसी को भूमि चिन्हाकन कर आगामी बैठक में विस्तृत आख्या उपलब्ध कराने को निर्देश दिये बैठक में उद्यमियों द्वारा बैंकों से पैसा निकासी आदि समस्याओं के सम्बन्ध में अवगत कराने पर जिलाधिकारी ने एलडीएम को व्यापारियों के साथ बैंकर्स की बैठक कराकर समस्याओं को निस्तारित कराने के निर्देश दियें बैठक में व्यापारियों द्वारा सिराथू बाजार में सड़क के किनारे हुए एक गड्ढे को भरवाने के अनुरोध पर जिलाधिकारी ने ईओ सिराथू को गडढा भरवाने के निर्देश दियें बैठक में बताया गया कि कुछ दुकानदारों द्वारा बाजार बन्दी दिवस में भी दुकानें खोली जा रही है, जिस पर जिलाधिकारी ने सहायक श्रमायुक्त को बाजारों का निरीक्षण कर बन्दी दिवस सुनिश्चित करने के निर्देश दियें उन्होने सम्बन्धित अधिकारियों को संचारी रोग नियन्त्रण अभियान के तहत नियमित फागिंग एंव एन्टी लारवा का छिडकाव कराने के निर्देश दिये बैठक में मंण्डी सचिव के न आने पर जिलाधिकारी ने नाराजगी प्रकट करते हुए उनके विरूद्व विभागीय कार्यवाही हेतु पत्र प्रेषित करने के निर्देश दिये बैठक में परियोजना निदेशक उपायुक्त उद्योग एस सिद्दीकी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण रमेश अग्रहरि प्रवेश केशरवानी अरविन्द केशरवानी अंशुल केशरवानी प्रमोद साहू सहित अन्य व्यापारीगण उपस्थित रहें।

न्यायाधिकरण खाली होने से मुकदमों का नहीं हो रहा निस्तारण

कौशांबी। दुर्घटना अभ्यर्थना न्यायाधिकरण की अदालत बीते 7 महीने खाली चल रही है इस न्यायाधिकरण में तैनात जज का 7 महीने पूर्व स्थानांतरण हो गया है जिसके बाद से नए जज की तैनाती नहीं हुई है बीते 2 वर्षों से कोविड-19 के चलते मोटर दुर्घटना का क्लेम का निस्तारण नहीं हो सका है तमाम फाइल लंबित पड़ी हैं जिससे दुर्घटना मोटर क्लेम के दावेदारों के आवेदन का निस्तारण नहीं हो रहा है आवेदन कर्ता और अधिवक्ता प्रतिदिन अदालत का चक्कर लगाकर वापस लौट आते हैं दुर्घटना मोटर क्लेम के दावेदारों ने उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यपाल से मांग की है कि दुर्घटना अभ्यर्थना न्यायाधिकरण कौशाम्बी में जज की तैनाती की जाए जिससे लंबित मुकदमों का निस्तारण जल्द हो सके।

नगर विकास मंत्री से नगर पालिका की धांधली की शिकायत

भाजपा नेता दुर्गेश कुमार गुप्ता ने लखनऊ पहुंचकर नगर विकास मंत्री से किया मुलाकात

अखंड भारत संदेश

नगर विकास मंत्री से मिलकर शिकायत करते भाजपा नेता दुर्गेश गुप्ता

कौशाम्बी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर की नगर पालिका में विकास कार्यों के नाम पर बड़ी धांधली किए जाने के मामले को गंभीरता से लेते हुए भाजपा नेता दुर्गेश कुमार गुप्ता ने नगर विकास मंत्री अरविंद कुमार शर्मा से लखनऊ स्थित आवास पर उनसे मुलाकात की और नगर पालिका परिषद मंझनपुर में विकास के नाम पर करोड़ो की धांधली आम जनता के साथ अधिकारियों द्वारा अत्याचार आतंक की कहानी बताते हुए बीते एक वर्षों के दौरान नगर क्षेत्र में कराए गए कार्यों की जांच कराए जाने की मांग की है। भाजपा नेता दुर्गेश गुप्ता के पत्र पर नगर विकास मंत्री ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच कराने का भाजपा नेता दुर्गेश को उन्होंने आश्वासन दिया है बताते चलें कि बीते एक वर्ष मे नगर पालिका क्षेत्र में 70 करोड़ से अधिक की रकम विकास कार्यों के नाम पर नगर पालिका के जिम्मेदारों ने फर्जी बिल बाउचर के जरिए खर्च कर दिया है विकास के नाम पर नगर पालिका क्षेत्र में जमकर धांधली हुई है मंझनपुर नगर पालिका की शिकायत मिलने के बाद नगर विकास मंत्री ने आश्वस्त किया है कि नगर पालिका मंझनपुर में विकास के नाम पर धांधली करने वाले अधिकारियों ठेकेदारों की खैर नहीं होगी नगरपालिका के दोषी अधिकारियों पर मुकदमा दर्ज कराते हुए निलंबन जैसी कठोर कार्यवाही कर सरकारी संपत्ति के नुकसान की भरपाई कराई जाएगी उन्होंने कड़े शब्दों में ठेकेदारों को भी चेतावनी दी है कि दोषी पाए जाने पर उनके खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करा कर गिरफ्तारी कराई जाएगी और ठेकेदारों के निजी संपत्तियों से नगर पालिका के नुकसान की भरपाई की जाएगी।

संपादकीय

सेवा-समर्पण से फतह करें शिखर

भारत उत्सव प्रिय देश है। वह कठिनतम समय में भी उत्सव मनाने की संभावनाएं तलाशता है। उसका राजनीतिक समाज भी इस बात को बेहतर समझता है। भारतीय जनता पार्टी का तो इस मामले में कोई सानी नहीं है। वह तो एक तरह से आयोजनों में जीती है। आयोजनों के जरिये वह जनता से सीधे तौर पर जुड़ी रहती है। अन्य राजनीतिक दल भी ऐसा कुछ कर पाते लेकिन वे अपनी राजनीतिक और विकासपरक गतिविधियों से भाजपा से बड़ी रेखा खींचने की बजाय उसे अस्थिर करने की दुरभिसंधियों में ही अपने श्रम और समय का नुकसान कर रहे हैं। वे भाजपा के 42 साल के राजनीतिक सफर को देखें, दो सांसदों से 303 सांसदों वाली पार्टी बनने की उसकी रणनीति पर विचार करें। स्थापना दिवस तो हर पार्टी के आते हैं लेकिन इस आयोजन को जन सापेक्ष कैसे बनाया जाए, विरोधी दल यह हुनर भाजपा से बेहतर तरीके से सीख सकते हैं। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में किसी को भी प्रगति सहसा नहीं मिल जाती। शिखर पर चढ़ना जितना मुश्किल होता है, उससे कहीं अधिक मुश्किल होता है खुद को शिखर पर बनाए रखना। शिखर तक पहुंचने का कोई शॉर्टकट नहीं होता। पार्टी सामूहिक उत्तरदायित्व है। इस बात को राजनीतिक दल जितनी जल्द समझ लेंगे, वे शिखर की यात्रा पथ पर अग्रसर हो जाएंगे। भाजपा केंद्र और 18 राज्यों में सत्तासीन है। कुछ राज्यों में उसके सहयोगी दलों की सरकार है। इतनी बड़ी उपलब्धि उसके रणनीतिकारों और कार्यकताओं की कड़ी मेहनत, लगन और पार्टी के प्रति समर्पण का ही प्रतिफल है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा के स्थापना दिवस पर बेहद पते की बात कही है कि आज दुनिया के सामने ऐसा भारत है जो बिना किसी भय या दबाव के, अपने हितों के प्रति अडिग है और जब पूरी दुनिया दो विरोधी ध्रुवों में बंटी हो तब भारत को ऐसे देश के रूप में देखा जा रहा है जो दृढ़ता के साथ मानवता की बात कर सकता है। उन्होंने न केवल राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए काम करने का विश्वास जताया है, बल्कि यह भी बताया है कि आज भारत के पास नीति भी है, नीयत भी है। निर्णय और निश्चय की शक्ति भी है। यही वजह है कि वह न केवल अपने लक्ष्य तय कर रहा है बल्कि उसे पूरे भी कर रहा है। सबका साथ, सबका विकास का मंत्र भी है और वह सबका विश्वास प्राप्त करने में भी जुटी है। कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कोहिमा तक भाजपा एक भारत, श्रेष्ठ भारत के संकल्प को निरंतर सशक्त कर रही है। गौरतलब है कि भाजपा अपना स्थापना दिवस ऐसे समय पर मना रही है जब चार राज्यों में अपनी सत्ता बरकरार रखने में दोबारा कामयाब हुई है। तीन दशकों में राज्यसभा में 100 सांसदों वाली पहली पार्टी बनी है। 6 अप्रैल, 1980 से आज तक उसने राजनीतिक उत्थान-पतन के अनेक पड़ाव देखे लेकिन जिस तेजी के साथ वह उत्तरोत्तर विकसित हो रही है, उसने विरोधी दलों की पेशानियों पर बल ला दिए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस बात में दम है कि भारतीय जनता पार्टी जहां राष्ट्र भक्ति को समर्पित है वहीं विरोधी दलों का समर्पण परिवार भक्ति के प्रति है। परिवार वादी पार्टियों को उन्होंने लोकतंत्र का दुश्मन, संविधान और संवैधानिक संस्थाओं की उपेक्षा करने वाला करार दिया है। उन पर यह भी आरोप लगाया है कि परिवार वादी दलों ने देश की प्रतिभा तथा युवा शक्ति को कभी उभरने नहीं दिया। हमेशा उनके पैर खींचे।

रामनवमी: अपार श्रद्धा, भक्ति और उल्लास का पर्व

योगेश कुमार गोयल

ऐसे में जब श्रीराम को माता केकैयी द्वारा यह वचन मांगने और अपने पिता महाराज दशरथ के इस धर्मसंकट में फंसे होने का पता चला तो उन्होंने खुशी-खुशी उनकी यह कठोर आज्ञा भी सहज भाव से शिरोधार्य की और उसी समय 14 वर्ष का वनवास भोगने तथा छोटे भाई भरत को राजगद्दी सौंपने की तैयारी कर ली। श्रीराम द्वारा लाख मना किए जाने पर भी उनकी पत्नी सीता जी और अनुज लक्ष्मण भी उनके साथ वनों में निकल पड़े

भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल पक्ष नवमी को रामनवमी का त्योहार समूचे भारतवर्ष में अपार श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में उत्सवों का विशेष आयोजन होता है, जिनमें भाग लेने के लिए देशभर से हजारों भक्तगण अयोध्या पहुंचते हैं तथा अयोध्या स्थित सरयू नदी में पवित्र स्नान कर पंचकोसी की परिक्रमा करते हैं। समूची अयोध्या नगरी इस दिन पूरी तरह राममय नजर आती है और हर तरफ भजन-कीर्तनों तथा अखण्ड रामायण के पाठ की गूंज सुनाई पड़ती है। देशभर में अन्य स्थानों पर भी जगह-जगह इस दिन श्रद्धापूर्वक हवन, व्रत, उपवास, यज्ञ, दान-पुण्य आदि विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। विभिन्न हिन्दू धर्मग्रंथों में कहा गया है कि श्रीराम का जन्म नवरात्र के अवसर पर नवदुर्गा के पाठ के समापन के पश्चात हुआ था और उनके शरीर में मां दुर्गा की नवीं शक्ति जागृत थी। मान्यता है कि त्रेता युग में इसी दिन अयोध्या के महाराजा दशरथ की पटरानी महारानी कौशल्या ने मयार्दा पुरूषोत्तम श्रीराम को जन्म दिया था। वाल्मिकी रामायण के अनुसार, ह्यभगवान श्रीराम चन्द्रमा के समान अति सुंदर, समुद्र के समान गंभीर और पृथ्वी के समान अत्यंत धैर्यवान थे तथा इतने शील सम्पन्न थे कि दुखों के आवेश में जीने के बावजूद कभी किसी को कटु वचन नहीं बोलते थे।

वे अपने माता-पिता, गुरूजनों, भाईयों, सेवकों, प्रजाजनों अर्थात हर किसी के प्रति अपने स्नेहपूर्ण दायित्वों का निर्वाह किया करते थे। माता-पिता के प्रति कर्तव्य पालन एवं आज्ञा पालन की भावना तो उनमें कूट-कूटकर भरी थी। उनकी कठोर से कठोर आज्ञा के पालन के लिए भी वह हर समय तत्पर रहते थे। श्रीराम का चरित्र बेहद उदार प्रवृत्ति का था। उन्होंने उस अहिल्या का भी उद्धार किया, जिसे उसके पति ने देवराज इन्द्र द्वारा छलपूर्वक उसका शीलभंग किए जाने के कारण पतित घोषित कर पत्थर की मूर्त बना दिया था। जिस अहिल्या को निर्दोष मानकर किसी ने नहीं अपनाया, उसे भगवान श्रीराम ने अपनी छत्रछाया प्रदान की। लोगों को गंगा नदी पार कराने वाले एक मामूली से नाविक केवट की अपने प्रति अपार श्रद्धा व भक्ति से प्रभावित होकर भगवान श्रीराम ने उसे अपने छोटे भाई का दर्जा दिया और उसे मोक्ष प्रदान किया। अपनी परम भक्त शबरी नामक भीलनी के जूठे बेर खाकर शबरी का कल्याण किया। महारानी केकैयी ने महाराजा दशरथ से जब राम को 14 वर्ष का वनवास दिए जाने और अपने लाडले पुत्र भरत को राम की जगह राजगद्दी सौंपने का वचन मांगा तो दशरथ गंभीर धर्मसंकट में फंस गए थे। वह बिना किसी कारण राम को 14 वर्ष के लिए वनों में भटकने के लिए भला कैसे कह सकते थे और श्रीराम में तो वैसे भी उनके प्राण बसते थे। दूसरी ओर वचन का पालन करना रघुकुल की मयार्दा थी।

ऐसे में जब श्रीराम को माता केकैयी द्वारा यह वचन मांगने और अपने पिता महाराज दशरथ के इस धर्मसंकट में फंसे होने का पता चला तो उन्होंने खुशी-खुशी उनकी यह कठोर आज्ञा भी सहज भाव से शिरोधार्य की और उसी समय 14 वर्ष का वनवास भोगने तथा छोटे भाई भरत को राजगद्दी सौंपने की तैयारी कर ली। श्रीराम द्वारा लाख मना किए जाने पर भी उनकी पत्नी सीता जी और अनुज लक्ष्मण भी उनके साथ वनों में निकल पड़े। वनवास की यात्रा की शुरूआत श्रृंगवेरपुर नामक स्थान से प्रारंभ कर वहां से वे भारद्वाज मुनि के आश्रम में चित्रकूट पहुंचे। उसके बाद विभिन्न स्थानों की यात्रा के दौरान पंचवटी में उन्होंने अपनी कुटिया बनाने का निश्चय किया। यहीं पर रावण की बहन शूर्पनखा की नाक काटे जाने की घटना हुई। उसी घटना के कारण वहां खर-दूषण सहित 14000 राक्षस राम-लक्ष्मण के हाथों मारे गए। यहीं से श्रीराम व लक्ष्मण की अनुपस्थिति में लंका का राजा रावण माता सीता का अपहरण कर उन्हें अपने साथ लंका ले गया। कहा जाता है कि जब सीता का विरह श्रीराम से नहीं सहा गया तो उन्होंने साधारण मनुष्य की भांति विलाप किया लेकिन हिम्मत न हारते हुए सीता जी की खोज में राम-लक्ष्मण जंगलों में भटकने लगे। इसी दौरान उनकी भेंट हनुमान से हुई, जिन्होंने राम-लक्ष्मण को वानरराज बाली के छोटे भाई सुग्रीव से मिलाया, जो उस समय बाली के भय से यहां-वहां छिपता फिर रहा था।

श्रीराम ने बाली का वध कर सुग्रीव तथा बाली के पुत्र अंगद को किष्किंधा का शासन सौंपा और उसके बाद सुग्रीव की वानर सेना के नेतृत्व में लंका पर आक्रमण कर देवताओं पर भी विजय पाने वाले महाप्रतापी, महाबली, महापंडित तथा भगवान शिव के घोर उपासक लंका नरेश राक्षसराज रावण का वध कर सीता को उसके बंधन से मुक्त कराया। लंका पर खुद अपना अधिकार न जमाकर लंका का शासन रावण के छोटे भाई विभीषण को सौंप दिया तथा वनवास की अवधि समाप्त होने पर भैया लक्ष्मण, सीता जी व हनुमान सहित अयोध्या लौट आए। वास्तव में विधि के विधान के अनुसार राम को दुष्ट राक्षसों का विनाश करने के लिए ही वनवास मिला था। उन्होंने अपने मानव अवतार में न तो भगवान श्रीकृष्ण की भांति रासलीलाएं कीं और न ही कदम-कदम पर चमत्कारों का प्रदर्शन किया बल्कि उन्होंने सृष्टि के समक्ष अपने क्रियाकलापों के जरिये ऐसा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसकी वजह से उन्हें मर्यादा पुरूषोत्तम कहा गया। जहां तक राम-रावण के बीच हुए भीषण युद्ध की बात है तो वह सिर्फ दो राजाओं के बीच का सामान्य युद्ध नहीं था बल्कि दो विचारधाराओं का संघर्ष था, जिसमें एक मानव संस्कृति थी तो दूसरी राक्षसी संस्कृति। एक ओर क्षमादान की भावना को महत्व देने वाले व जनता के दुख-दर्द को समझने एवं वीतरागी भाव थे तो दूसरी ओर सबकुछ हड़प लेने की राक्षसी प्रवृत्ति। रावण अन्याय, अत्याचार व अनाचार का प्रतीक था तो श्रीराम सत्य, न्याय एवं सदाचार के। यही नहीं, सीताजी के अपहरण के बाद भी श्रीराम ने अपनी मयार्दाओं को कभी तिलांजलि नहीं दी।

उन्होंने रावण को महाज्ञानी के रूप में सदैव सम्मान दिया और यह इससे साबित भी हुआ कि रावण की मृत्यु से कुछ ही क्षण पूर्व श्रीराम ने लक्ष्मण को रावण के पास ज्ञान अर्जन के लिए भेजा था। मयार्दा पुरूषोत्तम श्रीराम में सभी के प्रति प्रेम की अगाध भावना कूट-कूटकर भरी थी। प्रजा वात्सल्यता, न्यायप्रियता और सत्यता के कारण ही उनके शासन को आदर्श शासन की संज्ञा दी जाती है और आज भी अच्छे शासन को रामराज्य कहकर परिभाषित किया जाता है। रामराज्य यानी सुख, शांति एवं न्याय का राज्य।

रामनवमी पर्व वास्तव में मयार्दा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की गुरू सेवा, माता-पिता की सेवा व आज्ञापालन, जात-पात के भेदभाव को मिटाने, क्षमाशीलता, भ्रातृप्रेम, पत्नीव्रता, न्यायप्रियता आदि विभिन्न महान आदर्शों एवं गुणों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है।

ताकि हवाई चप्पल पहना शख्स भी कर सके हवाई यात्रा

आर.के. सिन्हा

क्या आपने हाल-फिलहाल रेल तथा विमान से सफर किया है? अगर आपने दोनों से यात्रा की है तो आपने कुछ बड़े बदलावों को महसूस किया होगा जो हमारे देश के एविएशन सेक्टर में दिखाई दे रहे हैं। हो यह रहा है कि रेलवे स्टेशनों से अधिक यात्रियों की भीड़ हवाई अड्डों पर दिखाई दे रही है। आप किसी दिन राजधानी के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट से कहीं चले जाइये या फिर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से अपने गंतव्य स्थल की यात्रा पर निकल जाइये। यकीन मानिए कि आपको इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर ज्यादा भीड़ और अफरातफरी मिलेगी। इधर से हर वक्त सैकड़ों-हजारों लोग आ-जा रहे होते हैं। हरेक पांच मिनट पर एक फ्लाइट आ-जा रही होती है। शायद ही इतनी रफ्तार से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर गाड़ियों की आवाजाही होती हो। इन दोनों जगहों का उदाहरण देने का मकसद यह है क्योंकि इन दोनों का अपना अलग मुकाम है। जहां इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट को दुनिया के तीसरे सबसे व्यस्त एयरपोर्ट का दर्जा प्राप्त है, वहीं नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को रेल विभाग का सबसे कमाऊ रेलवे स्टेशन माना जाता है। यह भी देश का प्रमुख रेलवे स्टेशन है। दरअसल देश के एविएशन सेक्टर का तेजी से विकास बहुत सारे संकेत दे जाता है। माना जाता है कि इस सेक्टर में निवेश 3.1 का आर्थिक गुणक और 6.1 का रोजगार गुणक है। इसका मतलब है कि एविएशन सेक्टर में एक रुपये का निवेश लंबे समय में अर्थव्यवस्था में 3.1 रुपये जोड़ता है, और प्रत्येक प्रत्यक्ष रोजगार के लिए 6.1 अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होते हैं। एविएशन सेक्टर दुनिया में सबसे बड़े रोजगार और आउटपुट देने वाले क्षेत्रों में से एक है। भारत जैसे देश में जहां पर हर साल शिक्षित नौजवानों की पूरी फौज रोजगार के लिए तैयार हो जाती है, वहां एविएशन सेक्टर का विकास और विस्तार जरूरी है। आप दिल्ली से लेकर बनारस और मुंबई से लेकर लेह एयरपोर्ट में जाकर देख सकते हैं कि इनमें कितने लोग भांति-भांति का काम कर रहे हैं। इनमें महिलाएं भी खूब काम कर रही होती हैं। यानी यह सेक्टर महिलाओं को भी स्वावलंबी बना रहा है। देखिए, भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ता एविएशन सेक्टर का बाजार है। देश में हवाई अड्डों की संख्या 2013-14 में 74 से बढ़कर लगभग 140 हो चुकी है। 2024-25 तक यह संख्या 220 पहुंच तक जाने की संभावना है। देश में 2013-14 में 400 विमान थे और अब यह संख्या बढ़कर 700 से अधिक हो चुकी है। सरकार का यह इरादा है कि हर साल 100 से अधिक विमान शामिल हों। लास्ट माइल कनेक्टिविटी (कोई जगह छूट न जाए) के प्रावधान के साथ सरकार का ध्यान रीजनल कनेक्टिविटी पर है। देश में अब हवाई चप्पल पहनने वाला भी हवाई जहाज में सफर करने लगा है। यही इस क्षेत्र की सफलता को इंगित करता है। इस समूचे क्षेत्र में बहुत सकारात्मक बदलाव देखने में आ रहा है। भारत में जिस तरह विमान बेड़ों का विस्तार हो रहा है उससे आशा है कि देश में जल्दी ही लगभग 2000 वाणिज्यिक विमान आकाश में होंगे। उदाहरण के रूप में भारत के कुल पायलटों में 15% महिला पायलट हैं, जो वैश्विक औसत का तीन गुना है। क्या यह मामूली उपलब्धि है? दुनिया में करीब 5 फीसदी पायलट महिला हैं। लेकिन, भारत में महिला पायलटों की संख्या अधिक है। कुछ समय पहले सरकार ने राज्यसभा में बताया कि 17,726 रजिस्टर्ड पायलटों में महिला पायलटों की संख्या 2764 है। क्या कुछ साल पहले तक किसी ने सोचा था कि बिहार के दरभंगा में भी विमान आने-जाने लगेंगे? दरअसल अब सिर्फ बड़े और खास शहरों तक हवाई जहाज नहीं आ-जा रहे हैं। अब छोटे और मंझोले शहरों, जिन्हें टियर दो और तीन शहर माना जाता है, वहां भी एयरपोर्ट बन गए हैं। वहां के हवाई अड्डों के अंदर-बाहर भी मुसाफिरों की भीड़ लगी रहती है। ये सब देश-विदेश आ-जा रहे होते हैं। इनमें किसी रेलवे स्टेशन जैसा ही मंजर दिखाई देता है। यकीन मानिए कि चंडीगढ़. पटना, त्रिचि, नागपुर लखनऊ, अमृतसर जैसे शहरों के हवाई अड्डों में भी अब तिल रखने की जगह नहीं होती। इन सब स्थानों से भी लोग दुबई, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया वगैरह घूमने के लिए निकल रहे होते हैं, तो कुछ काम-धंधे के सिलसिले में अन्य देशों में जा रहे होते हैं। भारत से बाहर जाने वाले 30 फीसदी लोग सिर्फ घूमने के लिए जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक, साल 2025 तक डेढ़ करोड़ भारतीय हर साल सैर-सपाटा के लिए देश से बाहर जाने लगेंगे।

विचार

भगवान श्रीराम राम के जीवन में वनवासी

प्रमोद भार्गव

प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में रामायण जनमानस में सबसे ज्यादा लोकप्रिय ग्रंथ है। भारत के सामंत और वर्तमान संवैधानिक भारतीय लोकतंत्र में राम के आदर्श मूल्य और रामराज्य की परिकल्पना प्रकट अथवा अप्रकट रूप में हमेशा मौजूद रही है। अतएव रामायण कालीन मूल्यों ने भारतीय जनमानस को सबसे ज्यादा उद्वेलित किया है। इस जन-समुदाय में रामकथा में उल्लेखित वे सब वनवासी जातियां भी शामिल हैं, जिन्हें वानर, भालू, गिद्ध, गरुड़ भील, कोल, नाग इत्यादि कहा गया है। यह सौ प्रतिशत सच्चाई है कि ये लोग वन-पशु नहीं थे। इसके उलट वन-प्रांतों में रहने वाले ऐसे विलक्षण समुदाय थे, जिनकी निर्भरता प्रकृति पर अवलंबित थी। उस कालखंड में इनमें से अधिकांश समूह वृक्षों की शाखाओं, पर्वतों की गुफाओं या फिर पर्वत शिखरों की कंदराओं में रहते थे। ये अर्धनग्न अवस्था में रहते थे और रक्षा के लिए पत्थर और लकड़ियों का प्रयोग करते थे। इसलिए इन्हें जंगली प्राणी का संबोधन कथित सभ्य समाज करने लगा। अलबत्ता सच्चाई है कि राम को मिले चौदह वर्षीय वनवास के कठिन समय में ये जंगली मान लिए गए आदिवासी समूह राम-सीता एवं लक्ष्मण के जीवन में नहीं आए होते तो राम की आज जो पहचान है, वह संभव नहीं थी। राम ने लंका पर विजय इन्हीं वनवासियों के बूते पाई। जिन वन्य-प्राणियों के नाम से इन वनवासियों को रामायण काल में चिन्हित किया गया है, संभव है, ये लोग अपने समूहों की पहचान के लिए उपरोक्त प्राणियों के मुख के मुखौटे धारण करते हों। रागेय राघव ने अपनी पुस्तक महागाथा में यही अवधारणा दी है।रामायण में वनवासियों की महिमा का प्रदर्शन बालकांड से ही आरंभ हो जाता है। राजा दशरथ के साढू अंग देश के राजा लोमपाद हैं। संतान नहीं होने पर दशरथ, पत्नी कौशल्या से जन्मी पुत्री शांता को बाल्यावस्था में ही लोमपाद को गोद दे देते हैं। अंगदेश में जब भयंकर सूखा पड़ा, तब वनवासी ऋषि ऋश्यश्रृंग को बुलाया जाता है। ऋषि विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी अंगदेश में पहुंचकर यज्ञ के माध्यम से वर्षा के उपाय करते हैं। अततः मूसलधार बारिश हो जाती है। उनकी इस अनुकंपा से प्रसन्न होकर लोमपाद अपनी दत्तक पुत्री शांता का विवाह श्रृंगी से कर देते हैं। कालांतर में जब दशरथ को अपनी तीनों रानियों कौशल्या, कैकई और सुमित्रा से कोई संतान नहीं हुई, तब बूढ़े दशरथ चिंतित हुए। मंत्री सुमन्त्र से ज्ञात हुआ कि श्रृंगी पुत्रेष्ठि यज्ञ में दक्ष हैं। तब मुनि वशिष्ठ से सलाह के बाद श्रृंगी ऋषि को अयोध्या आमंत्रित किया। ऋश्यश्रृंग ने यज्ञ के प्रतिफल स्वरूप जो खीर तैयार की उसे तीनों रानियों को खिलाया। तत्पश्चात कौशल्या से राम, कैकई से भरत और सुमित्रा की कोख से लक्ष्मण व शत्रुघ्न का जन्म हुआ। इस प्रसंग से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि वनवासियों में महातपस्वी ऐसे ऋषि भी थे, जो कृत्रिम वर्षा और गर्भधारण चिकित्सा विधियों के जानकार थे।

राम को वनगमन के बाद पहला साथ निषादराज गुह का मिलता है। इलाहाबाद के पास स्थित श्रृंगवेरपुर से निषाद राज्य की सीमा शुरू होती है। निषाद को जब राम के आगमन की खबर मिलती है तो वे स्वयं राम की आगवनी के लिए पहुंचते हैं। हालांकि निषाद वनवासी नहीं है, उन्हें ढीमर, ढीबर, मछुआरा और बाथम कहा गया है। निषाद लोग शिल्पकार थे। उत्कृष्ट नावें और जहाजों के निर्माण में ये निपुण थे। निषाद के पास पांच सौ नौकाओं का बेड़ा उपलब्ध होने के साथ यथेष्ट सैन्य-शक्ति भी मौजूद थी। जब राम को वापस अयोध्या ले जाने की भरत की इच्छा पर संदेह होता है तो निषाद राम-लक्ष्मण की रक्षा का भरोसा अपनी सेना के बूते जताते हैं। किंतु राम अपने भ्राता पर अटूट विश्वास करते हुए कुशंकाओं का पटाक्षेप कर देते हैं। भरत-मिलन के बाद निषाद ही अपनी नौका पर राम, लक्ष्मण और सीता को बिठाकर गंगा पार कराते हैं। निषाद राज गुह ऐसे पहले व्यक्ति थे, जो राम को कौशल राज्य की सीमाओं के बाहर सुरक्षा का भरोसा देते हैं। हालांकि राम के आगे बढ़ते जाने के साथ उनसे अत्रि, वाल्मीकी, भरद्वाज, अगस्त्य, शरभंग, सुतीक्ष्ण, माण्डकणि और मतंग ऋषि मिले। निःसंदेह वनवासियों के बीच वन-खंडों में रहने वाले इन ऋषियों ने ही राम का मार्ग प्रशस्त किया। ऋषियों की जो वेधशालाएं, अग्निशालाएं और आश्रम थे, उन पर राक्षस तो आक्रमण करते हैं लेकिन वनवासियों ने किसी ऋषि को कष्ट पहुंचाया हो, ऐसा वाल्मीकि रामायण में ही नहीं, अन्य रामायण में भी उल्लेख नहीं मिलता।

ये निम्बूडा...आय निम्बूडा हो हो ओ हो धिनक धिनक धिनक धिनता..

सुनील महला

तोताराम जी की धर्मपत्नी जी लय में गा रही है- "ये निम्बूडा...आय निम्बूडा हो हो ओ हो धिनक धिनक धिनक धिनता...निम्बूडा निम्बूडा निम्बूडा...निम्बूडा निम्बूडा निम्बूडा....अरे काचा काचा छोटा छोटा निम्बूडा मत लाइजो...अरे..रे...जी...मत लाइजो...जा खेत से हरियाला निम्बूडा मत लाइजो...अजी ! खाली ही आइज्यो...कभी भी ना लाइज्यो... सब्जी भी बिन नींबू ही थे खाइज्यो...!" तोताराम जी अपनी पत्नी के मुखारविंद से नींबूड़ा नहीं लाने का गीत सुनकर मुस्कुरा कर बोले- अरी ! पप्पूराम की मां सुनती हो, तुम्हें तो जन्म जन्म से नींबूड़ा नींबूड़ा का रोग लगा हुआ था, दिन हो या रात, गर्मी हो या सर्दी हरदम नींबूड़ा नींबूड़ा चिल्लाती थी। अब नींबू से अचानक तुम्हें इतनी नफरत क्यों हो गई, जो गा रही हो कि नींबूड़ा मत लाइज्यो ? तोताराम जी की पत्नी रसोई घर से बाहर आई और बोली आजकल ये नींबू वींबू हैं न पहले जैसा नहीं रहा। देखने मात्र पर भी आंखें तरेरता है, आंखों को लाल-नीली-पीली कर लेता है। अजी ! अब पहले वाली सी बात नहीं रही, जो नींबू को जब मन चाहा निचोड़ा और गटाक से पी गये। अब तो मुआ नींबूड़ा खुद आदमीजात को पीने को आतुर है। अजी ! समय के साथ नींबू भी बदल गया है जी।अब न इस नींबू में रस है और न ही नींबू में जस (यश, कीर्ति) है। आदमी इसमें फंस गया है जी। आज आदमी नींबू को तरस रहा है और नींबू है कि आदमी पर बरस रहा है। पहले नींबू न तेज था, इसलिए रखा मेज मेज था। अब नींबू में पहले सा ओज नहीं रहा, इसकी खुशबू मारी गई है। आदमी नींबू के भाव सुनकर अपने नथुनों को ही खराब बताने लगा है। अजी ! कुछ समझे ? नहीं न, तो सुनो नींबू गाथा। पकड़ लो अपना माथा। एक था "नींबू"। पहले के जमाने में उस नींबू से दीवानों की बुरी नजर से बचा जा सकता था, आजकल वही नींबू नखरे दिखा रहा है, बुरी नजर से नहीं बचा रहा। उलटा ये तो हमारी दमड़ी समड़ी को बुरी नजर लगा रहा है। अजी ! नीबू ने दमड़ी ली खींच,आंखें ली हैं भींच और आप भी अपनी जाड़ लो भींच। सुना है मुआ नींबू ! आजकल बादाम के भावों को टक्कर दे रहा है। नींबू न हुआ काजू बादाम हो गया। अजी ! नींबू सेब ,अनार हो गया। भाव सुनकर आदमी बीमार हो गया। नींबू आदमी पर सवार हो गया। अ

जी ! इस छोटे से गोल- गोल, काचे-काचे नींबू को देखिए मटक-मटक कर खुदरा में ही चार सौ रुपए प्रति किलो के भाव से बिक रहा है। इधर, भयंकर गर्मी के मारे आदमी सिंक रहा है। आजकल नींबू रस से नहीं महंगाई से युक्त है। तभी आदमी नींबू से मुक्त है। आदमीजात तो इसका भाव सुनकर ही बिदक रहा है। पहले के जमाने में सिर्फ ऊंट बिदकते थे,आजकल नींबू की महंगाई को देखकर आदमी भी बिदक रहे हैं और मार्केट में नींबू फुदक रहे हैं। अजी ! हमारे देश के एक मंत्री महोदय जी ने एक लड़ाकू विमान की डिलीवरी के समय उसके पहियों के नीचे "नींबूड़ा सींबूड़ा" को क्या रख दिया, आजकल यह नींबू खुद को शहंशाह समझने लगा है। नींबू को यह गुमान हो गया है कि वह तो आजकल देश की सुरक्षा को मजबूत करने के महत्वपूर्ण काम में उपयोग लिया जा रहा है।

कोरोना काल में लोगों ने नींबूओं का अधिक प्रयोग क्या किया, ये तो लोगों के सिर पर ही चढ़ कर बैठ गया। बुरी नजर से बचाने के लिए लोगों ने अपने घरों, दुकानों पर नींबू को इतना लटकाया कि अब इस लटकन से तंग आकर स्वयं नींबू ने आदमी को लटका डाला है। और तो और वाहनों पर भी लोग खूब नींबू टांगने लगे हैं, तो नींबू और भी चौड़ा हो गया। आजकल नींबू अपना 56 इंची सीना तानकर चलता है। अजी ! इस नींबूड़ा ने तो सारी हदें पार कर दी हैं। वो क्या है कि जब से एक ट्विटर यूजर के मुंह से इस नींबूड़ा ने यह बात सुनी है कि इस देश से बेरोजगारी दूर करने और खाते में पन्द्रह लाख लाने के लिए नींबूओं की आपातकालीन जरूरत कभी भी पड़ सकती है, तब से ये जो छोटा-छोटा सा गोल-मटोल, पीला-पीला, हल्का- हल्का हरा-हरा सा जो नींबू हैं न, बाजार में पड़ा पड़ा बड़ा इतराता फिर रहा है और फूलकर कुप्पा हो गया है।

अजी ! इस नींबूड़ा की कीमतें आदमी को टांग रही हैं, जनता कीमतें सुनकर बांग पर बांग रही है। बरसों बरसों से होड़म-होड़ में हमने इसे खूब अपने गाड़ी-घोड़ों पर टांगा,और अब ये अपने टंगने-टांगने का हमसे बदला ले रहा है और बात बात पर अपनी टांग पर टांग अड़ा रहा है। यह बड़ा बदमाश किस्म का हो गया है।

नेताजी के भाषण की भी खूब तैयारी कर ली थी..

डॉ. सुरेश कुमार

नेता जी को जल्दी उठने की आदत नहीं थी। फिर भी भोर में उठकर नहा धो लिया। जनसभा को संबोधित करना था। वे एकदम चाकचौबंद थे। भाषण की भी खूब तैयारी कर ली थी। हश्र यह था कि चम्मच, छुरी, कांटा जो कुछ भी हाथ लग जाता उसी को माइक समझकर भाषण देना शुरू कर देते। लेकिन इधर नेताजी के सेक्रेटरी बड़े घबराए हुए थे। न जाने क्या हुआ कि सुबह से मुँह लटकाए घोर चिंता में डूबे हुए थे। मानो किसी ने उनसे प्राण माँग लिए हों। नेताजी सेक्रेटरी के रग-रग से वाकिफ थे। उन्होंने सेक्रेटरी की चिंता का कारण पूछा। सेक्रेटरी ने कहा झ साहब! पाँच साल पहले आप इसी तरह तैयार होकर भाषण देने गए थे और सौभाग्य से विधायक भी बन गए। लेकिन सच्चाई यह है कि आपका किया एक भी वादा पूरा नहीं हुआ। अब हम किस मुँह से जनता का सामना करेंगे? अगर कहीं जनता भड़क गयी तो लेने के देने पड़ जायेंगे। नेताजी सिगरेट का कश लगाते हुए बड़े इत्मिनान के साथ कहा देखो सेक्रेटरी! यह जनता भी बड़ी अजीब होती है। यदि वे मुर्गमुसल्लम खा रहे हों और उनसे वह थाली छीन ली जाए तो वे रोटी-सब्जी खाने लगते हैं। अगर रोटी-सब्जी छीन ली जाए तो चावल-दाल खाने लगते हैं। और चावल-दाल छीन ली जाए तो पानी पीकर रह जाते हैं। जनता बड़ी जुगाडु होती है। ऐसे में अगर उनसे यह वादा कर दिया जाए कि हम घर के प्रत्येक सदस्य को दस-दस किलो चावल मुफ्त देंगे तो वे अपना मुर्गमुसल्लम भुलाकर फिर से हम पर विश्वास करने लगेंगे। यह जनता किसी सिगरेट से कम नहीं है। पाँच साल तक इनका जितना कश लगाया जा सकता है, लगाओ और किए हुए वादों को धुएँ के माफिक हवा में गायब हो जाने दो। जनता हमेशा आज में जीती है। इसलिए तुम चिंता मत करो। मेरे पास जनता को बहलाने के बहुत सारे वादे हैं।

डेविड वॉर्नर के साथ पहली बार बल्लेबाजी करने का लुत्फ लिया: पृथ्वी शॉ

नई दिल्ली: जेएसडब्ल्यू-जीएमआर की सह-स्वामित्व वाली आईपीएल की दिल्ली कैपिटल्स फ्रेंचाइजी गुरुवार को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ टाटा आईपीएल 2022 के अपने मैच में छह विकेट से हार गई लेकिन इस मैच में बेहतरीन पारी खेलने वाले उसके सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ ने कहा कि टीम इस मैच से हासिल सकारात्मक चीजों पर ध्यान केंद्रित करेगी। शॉ ने कहा, "हम एलएसजी के खिलाफ बल्लेबाजी इकाई के रूप में अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर सके लेकिन हमें जिस तरह की शुरूआत मिली थी, वह हमारे लिए काफी सकारात्मक बात थी। हम अपने दिमाग में कोई

नकारात्मक बात नहीं रखेंगे और अपने अगले मैच पर ध्यान केंद्रित करेंगे। 34 गेंदों पर 61 रनों की तेजतर्रार पारी खेलने वाले शॉ ने कहा कि टीम को कुछ छोटे-मोटे सुधार करने की जरूरत होगी। शॉ ने कहा, "सभी खिलाड़ियों को मैदान पर एक-दूसरे को जानने में समय लगेगा। आज हमें पता चल गया है कि एक टीम के तौर पर हम क्या कर सकते हैं। भले ही हम अधिक रन नहीं बना सके लेकिन हम अंत तक लड़े और और इस दौरान हर किसी को हर किसी का साथ मिला। हमें आगे के मैचों मे जीत हासिल करने के लिए बस कुछ छोटे सुधार करने की जरूरत है और आशा है कि हम फिर से जीत की पटरी पर लौट आएंगे। डेविड वॉर्नर के साथ बल्लेबाजी के अपने अनुभव के बारे में पूछे जाने पर इस सलामी बल्लेबाज ने कहा, वॉर्नर 10 से अधिक वर्षों से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेल रहे हैं। एक फैन के तौर पर मैंने यह देखा और महसूस किया है कि वह किस अंदाज में गेंद पर प्रहार करते हैं। मैं इस बात का कायल हूं। मुझे नॉन-स्ट्राइकर एंड पर खड़े होकर एक बल्लेबाज को छक्के और चौके मारते देखना पसंद है। एलएसजी के खिलाफ डेविड के साथ बल्लेबाजी करने का अनुभव शानदार था और एक बार जब हम अच्छी आपसी समझ बना लेंगे तो फिर उनके साथ बल्लेबाजी करना और भी बेहतर हो जाएगा।

आर्मी रेड ने इंटर सर्विसेज कबड्डी चैंपियनशिप का खिताब जीता

नई दिल्ली: आर्मी रेड ने इंटर सर्विसेज कबड्डी चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया है। आर्मी रेड ने फिनल में एयरफोर्स को हराकर खिताब जीता। इस प्रतियोगिता का आयोजन सेवा एवं वायु सेना खेल नियंत्रण बोर्ड के तत्वावधान में 04 से 07 अप्रैल 22 तक बेस रिपेयर डिपो पालम में किया गया था। प्रतियोगिता का उद्घाटन 04 अप्रैल 22 को एयर कमोडोर ए चतुर्वेदी ने किया था। इस प्रतियोगिता में तीनों सेवाओं के 68 खिलाड़ियों यानी सेना से दो और नौसेना और वायु सेना के एक-एक खिलाड़ी की कुल चार टीमों ने भाग लिया था।

12वीं राष्ट्रीय सीनियर हॉकी प्रतियोगिता: दिल्ली, झारखण्ड, बंगाल और गुजरात ने जीते अपने मुकाबले

भोपाल: हॉकी इंडिया तथा खेल और युवा कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में भोपाल में आयोजित 12वीं हॉकी इंडिया राष्ट्रीय सीनियर पुरुष हॉकी चैम्पियनशिप-2022 में शुक्रवार को पांच मैच खेले गए। इनमें दिल्ली, झारखण्ड, बंगाल और गुजरात ने अपने-अपने मुकाबलों में जीत हासिल की, जबकि जम्मू एंड कश्मीर तथा दादर एंव नगर हवेली एंड दमन एवं दीव के बीच खेला गया मुकाबला 3-3 से बराबरी पर छूटा।

प्रतियोगिता 6 से 17 अप्रैल तक भोपाल के मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में खेली जा रही है। शुक्रवार को प्रतियोगिता में पहला मैच हॉकी पंजाब और हॉकी दिल्ली के मध्य खेला गया। इस मुकाबले में हॉकी दिल्ली ने पंजाब हॉकी को 3-2 से परास्त किया। दूसरा मुकाबला हॉकी चण्डीगढ़ और हॉकी झारखण्ड के मध्य खेला गया। इस मुकाबले को झारखण्ड हॉकी ने 3-2 से जीता। तीसरा मुकाबला हॉकी जम्मू एंड कश्मीर तथा दादर एवं नगर हवेली एंड दमन एवं दीव हॉकी के मध्य 3-3 से बराबरी पर रहा। चौथा मुकाबला हॉकी बंगाल और पुडुचेरी हॉकी के मध्य खेला गया। इस मुकाबले में हॉकी बंगाल ने पुडुचेरी को 3-2 से परास्त किया। पांचवा मुकाबला हॉकी गुजरात और हॉकी अरूणाचल के मध्य खेला गया। इस मुकाबले में गुजरात ने अरूणाचल हॉकी को

3-2 से परास्त किया।

पहला मुकाबला-हॉकी पंजाब विरूद्ध दिल्ली हॉकी: आज खेल गए पहले मुकाबले के पहले क्वार्टर के 10वें मिनट में दिल्ली के खिलाड़ी धीरज वत्स ने पेनॉल्टी कार्नर से अपनी टीम के लिए पहला गोल किया। इसी क्वार्टर के 13वें मिनट में पंजाब के खिलाड़ी लवप्रीत जैन्थ ने फील्ड गोल कर अपनी टीम को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। मैच के 14वें मिनट में पंजाब की टीम को पेनॉल्टी कार्नर मिला, जिसे उनके खिलाड़ी महकीत सिंह ने गोल में बदलकर अपनी टीम को 2-1 से बढ़त दिलायी।

दूसरे क्वार्टर के 25वें मिनट में दिल्ली के खिलाड़ी धीरज वत्स ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम को 2-2 की बराबरी पर ला दिया। मैच के तीसरे क्वार्टर में दोनों ही टीमें कोई गोल नहीं कर सकी। मैच के चौथे और अंतिम क्वार्टर के 60वें मिनट में दिल्ली के खिलाड़ी रोहित ने फील्ड गोल कर अपनी टीम को 3-2 से विजय दिलायी।

दूसरा मुकाबला- हॉकी चण्डीगढ़ विरूद्ध हॉकी झारखण्ड: दूसरे मुकाबले के पहले क्वार्टर के 7वें मिनट में चंडीगढ़ के खिलाड़ी कवंलजीत सिंह ने फील्ड गोल कर अपनी टीम को 1-0 की बढ़त दिलायी। मैच के दूसरे क्वार्टर के 17वें मिनट में झारखण्ड के कप्तान अनुरूद्ध भेंग्रा ने फील्ड गोल कर अपनी टीम को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। इसी क्वार्टर के 23वें मिनट में झारखण्ड के खिलाड़ी नोयल टोप्नो ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम को 2-1 की बढ़त दिलायी। मैच के तीसरे क्वार्टर के 37वें मिनट में चंडीगढ़ के खिलाड़ी मोहित ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम को 2-2 से बराबरी पर ला दिया। इसी क्वार्टर के 43वें मिनट में झारखण्ड के खिलाड़ी मनोहर मुंडु ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम को 3-2 से बढ़त दिलायी। मैच के चौथे और अंतिम क्वार्टर में दोनों ही टीमें कोई गोल नहीं कर सकी। और मुकाबले को झारखण्ड ने 3-2 से जीत लिया।

तीसरा मुकाबला- हॉकी जम्मू एंड कश्मीर तथा दादर एवं नागर हवेली एंड दमन एवं दीव हॉकी: तीसरे मुकाबले के पहले क्वार्टर के 15वें मिनट में जम्मू एंड कश्मीर के खिलाड़ी सोहिल अजीम ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम का स्कोर 1-0 कर दिया। मैच के दूसरे क्वार्टर के 16वें मिनट में दादर एवं नागर हवेली एंड दमन एवं दीव के खिलाड़ी नबीन कुजुर ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम का स्कोर 1-1 से बराबरी पर ला दिया। मैच के 22वें मिनट में जम्मू एंड कश्मीर के खिलाड़ी बलमीत सिंह ने पेनॉल्टी कार्नर से गोल कर अपनी टीम को 2-1 से आगे कर दिया।

कार्यालय ग्राम पंचायत बेलवा वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **बेलवा** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 1 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:-

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग-अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :- 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

गुड़िया यादव
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत बेलवा
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/2022-23/ दिनांक 08.04.2022

राम बहादुर
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. बेलवा
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

दिल्ली के खिलाफ मिली जीत के बाद बोले राहुल- यह एक पूर्ण टीम प्रयास था

नवीं मुंबई। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ छह विकेट से मिली रोमांचक जीत के बाद, लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान केएल राहुल ने कहा कि यह एक पूर्ण टीम प्रयास था और सभी ने मैच में शानदार प्रदर्शन किया। क्विंटन डी कॉक की शानदार 80 रनों की पारी और आयुष बडोनी के 10 रनों की तेज पारी की बदौलत लखनऊ सुपर जायंट्स ने गुरुवार को नवी मुंबई के डॉ डी वाई पाटिल स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स को आखिरी ओवर में 6 विकेट से हराया। राहुल ने मैच के बाद कहा, "मुझे लगता है कि हम गेंद के साथ शानदार थे। पावरप्ले में, हमें स्पष्ट रूप से काम करने की जरूरत है। लेकिन पावरप्ले कभी-कभी ऐसा ही होता है। हमने उसके बाद चीजों का अच्छी तरह से आकलन किया और बेहतर गेंदबाजी की। पावरप्ले के बाद गेंदबाजों को गेंदबाजी करने के लिए लाइन, लंबाई और गति पर चर्चा करते हुए देखकर अच्छा लगा।"

राहुल ने युवा बडोनी की तारीफ करते हे कहा, " बडोनी हर मैच के साथ और बेहतर होते जा रहे हैं, खासकर दवाब में उनकी बल्लेबाजी खास हो जाती है। आईपीएल उनके लिए बहुत अच्छी सीख है, उसके लिए कड़ी मेहनत करना और विनम्र रहना महत्वपूर्ण है। अब तक पूरी टीम का प्रयास रहा है। जिस तरह से सभी ने कदम बढ़ाया है वह शानदार है।"

इस मुकाबले में दिल्ली ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 3 विकेट पर 149 रन बनाए। दिल्ली की तरफ से सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ ने शानदार अर्धशतकीय पारी खेलते हुए 34 गेंदों पर 9 चौकों और 2 छक्कों की बदौलत 61 रन बनाए, जबकि कप्तान रिषभ पंत ने 36 गेंदों पर नाबाद 39 और सरफराज खान ने 28 गेंदों पर नाबाद 36 रन बनाए। लखनऊ की तरफ से रवि बिश्नोई ने 2 और कृष्णप्पा गौथम ने 1 विकेट लिया।

जवाब में लखनऊ ने 19.4 ओवर में चार विकेट के नुकसान पर 155 रन बनाकर मैच जीत लिया। लखनऊ की तरफ से क्विंटन डी कॉक ने 80, कप्तान केएल राहुल ने 24 व क्रुणाल पांड्या ने नाबाद 19 और आयुष बडोनी ने नाबाद 10 रन बनाए। दिल्ली की तरफ से कुलदीप यादव ने 2, ललित यादव और शार्दुल ठाकुर ने 1-1 विकेट लिया।

कार्यालय ग्राम पंचायत रूदापुर वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **रूदापुर** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 4 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:-

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग-अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :- 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

सुनीता यादव
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत रूदापुर
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/2022-23/ दिनांक 08.04.2022

अश्वनी कुमार
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. रूदापुर
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत मनेथू वि. ख. सहसों, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2022–23 में मनरेगा/राज्य वित्त आयोग/14वां वित्त आयोग/15 वां वित्त आयोग / कायाकल्प योजना / स्वच्छ भारत मिशन व बी आर जी एफ योजना के अन्तर्गत **मनेथू** ग्राम पंचायत के मद से कराए जाने वाले कार्य के लिए कार्यस्थलों पर निम्न सामग्री आपूर्ति हेतु सील बन्द अल्प कालिक निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 09.04.2022 से 14.04.2022 तक कार्यालय कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय / पंचायत भवन में सायं 4 बजे तक निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.04.2022 को निविदा हेतु गठित निर्माण कार्य समिति के सदस्यो के समक्ष 11 बजे खोली जायेगी।

सामग्रियों का विवरण निम्नवत है:-

क्र0	सामग्री	लम्बाई/मात्रा
1.	ईट 150 एम एम	प्रति हजार
2.	सिमेंट	प्रति नग
3.	मोरंग बालू	प्रति घन मीटर
4.	महीन बालू	प्रति घन मीटर
5.	स्टोन ब्लास्ट 22.4 एम एम से 35 एमएम (अलग-अलग)	प्रति घन मीटर
6.	ईट गिट्टी 20 एम एम (40 एम एम)	प्रति घन मीटर
7.	सरिया	प्रति कुन्तल
8.	ह्यूम पाइप 350 एम एम एन पी पी	प्रति नग
9.	ह्यूम पाइप 600/900 एम एम	प्रति नग
10.	सोलर लाईट व स्ट्रीट लाईट	प्रति नग
11.	इंटरलाकिंग ईट	प्रति हजार
12.	शौचालय सामग्री/दरवाजा कम्पलीट	प्रति नग
13.	पत्थर पटिया विभिन्न साइज	प्रति नग
14.	इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प मरम्मत सामग्री	प्रति नग
15.	चूना / पेन्ट इत्यादि	प्रति नग
16.	टाईल्स	प्रति नग
17.	किचन सेड सामग्री	प्रति नग
18.	गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा व अन्य सामग्री आपूर्ति	प्रति नग
19.	कोविड 19 के अन्तर्गत आवश्यक सामग्री	प्रति नग
20.	कम्प्यूटर व अन्य सामग्री	प्रति नग

नियम शर्तें :- 1. सामग्री की मात्रा कार्य स्वीकृत होने के बाद की जायेगी। 2. आवश्यकतानुसार सामग्री की आपूर्ति प्रधान एवं ग्राम पंचायत अधिकारी के आदेश पर ही की जायेगी अन्यथा नहीं। 3. सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सकती है। 4. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की निधि से स्वीकृत दर निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 5. सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा 50 रूपये के स्टाम्प पेपर पर बान्ड भरना अनिवार्य होगा। तदउपरान्त जारी किया जायेगा। 6. सामग्री आपूर्ति के बाद निर्माण समिति के स्वीकृत के बाद भुगतान किया जायेगा। 7. आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा आयकर दाता हो, प्रमाणित छायाप्रति संलग्न की जाय। 8. प्रस्तुत दर पी. डब्ल्यू. डी. की एकीकृत दर से अधिक न हो। 9. सामग्री आपूर्ति ग्राम पंचायत के आदेशानुसार निर्धारित समयावधि अन्तर्गत की जानी अनिवार्य होगी। 10. सामग्री की गुणवत्ता मानक के अनुरूप नही पाये जाने की दशा में भुगतान की धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। 11. निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी का होगा।

सुषमा देवी
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत मनेथू
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/2022-23/ दिनांक 08.04.2022

राम बहादुर
ग्राम विकास अधिकारी
ग्रा. पं. मनेथू
वि. ख. सहसों, प्रयागराज

रूस का दावाः बूचा में हमने नहीं किया नरसंहार, वीडियो पेश कर कहा- फर्जी है पूरा मामला

मास्को। यूक्रेन के बूचा में नरसंहार की जानकारी सामने आने के बाद रूस-यूक्रेन विवाद में नए सवाल खड़े हो गए हैं। यूक्रेन ने जहां बूचा में नागरिकों की हत्याओं का जिम्मेदार रूसी सेना को बताया है वहीं रूस ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया है। रूस के विदेश मंत्री सर्गी लैवरोव ने कहा है कि बीते कुछ दिनों में जो शवों के वीडियो और तस्वीरें सामने आई हैं वो फर्जी हैं और उन्हें बनाया गया है। इसके साथ ही बूचा को लेकर रूस ने कई अन्य दावे भी किए हैं और यूक्रेन पर आरोप लगाए हैं।

बूचा में शवों को दिखाते वीडियो को बताया है फर्जी

कनाडा में रूस के दूतावास ने हाल ही में एक वीडियो जारी किया था। इसमें इस बात को खारिज किया गया है कि वीडियो में शव दिखाई दे रहे हैं। वीडियो के साथ रूसी दूतावास ने लिखा, 'कीव के पास बूचा में नकली शवों को दिखाता फर्जी वीडियो'। रूस का समर्थन करने वाले सोशल मीडिया अकाउंट से इस वीडियो का एक धीमा वर्जन पोस्ट किए जा रहे हैं। इसके साथ ही यह दावा भी किया जा रहा है कि जो शव इस वीडियो में दिखाई दे रहे हैं उनमें से एक शव का हाथ हिलता दिखाई दे रहा है। इसके अलावा रूस के विदेश मंत्रालय ने एक ट्वीट में कहा कि कीव प्रशासन की ओर से जिन शवों की तस्वीरें जारी की जा रही हैं वह कम से कम चार दिन के बाद भी अकड़े नहीं हैं। मंत्रालय ने कहा है कि रूसी सेना ने 30 मार्च को इलाका छोड़ दिया था। मौत के कुछ घंटों के बाद शव अकड़ना शुरू हो जाता है। रूसी विदेश मंत्रालय ने यह दावा भी किया है कि कथित शवों पर आम तौर पर दिखने वाले निशान नहीं दिख रहे हैं। रूस के अनुसार ये रूसी सेना को बदनाम करने के लिए किया जा रहा है।

एक और सियासी उठापटकः कुवैत की सरकार ने इस्तीफा दिया, राजनीतिक संकट गहराया

कुवैत । कुवैत में एक बार फिर सियासी उठापटक सामने आई है। कुवैत की सरकार ने अपने गठन के कुछ महीने बाद ही इस्तीफा दे दिया। सरकार को कुछ ही दिनों में अविश्वास प्रस्ताव का सामना करना था। इसके साथ ही इस देश में राजनीतिक संकट गहरा गया है, जिसके चलते कई अहम आर्थिक और सामाजिक सुधार अधर में लटक गए हैं। सरकारी समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, कुवैत के प्रधानमंत्री शेख सबाह अल-खालिद अल हमद अल सबाह ने मंत्रिमंडल का इस्तीफा शहजादे को सौंप दिया। प्रधानमंत्री अल सबाह के नेतृत्व वाली सरकार को इस सप्ताह के अंत में संसद में अविश्वास प्रस्ताव का सामना करना था, जिससे पहले सरकार ने इस्तीफा दे दिया।

पिछले डेढ़ साल में कुवैत की तीसरी संयुक्त सरकार ने इस्तीफा दिया है। विपक्ष शेख सबाह सरकार के खिलाफ लगातार मोर्चाबंदी कर रहा था। पिछले सप्ताह गुस्साए सांसदों ने कथित भ्रष्टाचार और कुशासन को लेकर प्रधानमंत्री को निशाने पर लिया था और कई आरोप लगाए थे। विरोधी सांसदों ने सार्वजनिक तौर पर प्रधानमंत्री को अनुपयुक्त करार देते हुए नए प्रधानमंत्री द्वारा देश की कमान संभाले जाने का आह्वान किया था।

सैन्य खरीद में भारत की विविधता से अमेरिका उत्साहित, रूस से एस-400 मिसाइल खरीद पर जताई चिंता

वाशिंगटन। भारत अपनी सैन्य खरीद में विविधता ला रहा है। रक्षा उपकरणों की खरीद में इस विविधता से अमेरिका भी उत्साहित है। अमेरिकी रक्षा प्रतिष्ठान पेंटागन ने यह बात कही है। हालांकि, पेंटागन ने रूस से एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली खरीदने के भारत के फैसले पर चिंता भी जताई है। पेंटागन के प्रेस सचिव जान किर्बी ने कहा, 'पिछले एक दशक में भारत ने अपने रक्षा उपकरणों की खरीद में जैसी विविधता दिखाई है, उसे लेकर हम उत्साहित हैं। इसलिए हम भारत की बदलती जरूरतों के हिसाब से बातचीत जारी रखेंगे।' वहीं एस-400 की खरीद पर उन्होंने कहा, 'इस खरीद को लेकर अपनी चिंता के बारे में हमने भारत से बताया है। हम अन्य कई देशों से भी आग्रह कर रहे हैं कि रूस से हथियार न खरीदें।' अक्टूबर, 2018 में भारत ने एस-400 के लिए रूस के साथ पांच अरब डालर के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। समझौते के तहत भारत पांच यूनिट्स खरीदेगा। उस समय तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस सौदे पर आगे बढ़ने पर भारत पर प्रतिबंध का संकेत भी दिया था। हालांकि भारत सौदे से पीछे नहीं हटने के अपने रुख पर कायम रहा। अमेरिका ने कहा है कि यूक्रेन पर अपने आक्रमण से जुड़े मुद्दों पर रूस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में वीटो करना जारी रखेगा। व्हाइट हाउस में एक संवाददाता सम्मेलन में अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन ने कहा, स्वाभाविक रूप से यूएनएससी के स्थायी सदस्य के रूप में रूस के लिए यह सोच पाना कठिन है कि वह किसी चीज को बाधित करने के लिए अपने वीटो के अधिकार का इस्तेमाल नहीं

रूस ने किया इमरान का समर्थन, कहा- अमेरिका का आज्ञाकारी न होने की कीमत चुका रहे हैं

मास्को। रूस ने पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में ''हस्तक्षेप के एक अन्य शर्मनाक प्रयास' के लिए अमेरिका की निंदा की और कहा कि प्रधानमंत्री इमरान खान वाशिंगटन का ''आज्ञाकारी नहीं' होने की कीमत चुका रहे हैं और उन्हें इस वर्ष फरवरी माह में रूस आने के लिए दंडित किया जा रहा है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री खान ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से 24 फरवरी को मुलाकात की थी, यह वही दिन था जब रूस ने यूक्रेन के खिलाफ '' विशेष सैन्य अभियान' की घोषणा की थी। रूस की विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोव ने सोमवार को कहा कि मॉस्को की यात्रा रद्द करने के अमेरिकी दबाव के बावजूद खान ने यात्रा की थी। जखारोव ने कहा,''इस वर्ष 23-24 फरवरी को इमरान खान की मास्को की कामकाजी यात्रा की घोषणा के तुरंत बाद अमेरिकियों और उनके पश्चिमी सहयोगियों ने प्रधानमंत्री पर कड़े दबाव डालने शुरू कर दिए और यात्रा रद्द करने को कहा।' विदेश मंत्रालय की

प्रवक्ता का यह बयान ऐसे वक्त में आया है जब खान ने आरोप लगाए हैं कि अमेरिका इस्लामाबाद में सत्ता परिवर्तन का प्रयास कर रहा है। प्रवक्ता ने कहा,'' अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए एक स्वतंत्र देश के आंतरिक मामले में शर्मनाक हस्तक्षेप का अमेरिका का यह एक और प्रयास है और उपरोक्त तथ्य इसकी गवाही देते हैं।' रूस के एक वरिष्ठ राजनयिक ने कहा कि घटनाक्रम को देखने पर इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वाशिंगटन ने ''आज्ञा नहीं मानने वाले इमरान खान को दंडित करने का फैसला किया है', जो यह भी बताता है कि खान के सत्तारूढ़ गठबंधन के कई सदस्यों ने तीन अप्रैल को अविश्वास प्रस्ताव से पहले पक्ष और गठबंधन बदलने का फैसला क्यों किया। गौरतलब है कि पाकिस्तान में सियासी घमासान मचा हुआ है और राष्ट्रपति आरिफ अल्वी ने देश के प्रधानमंत्री इमरान खान की सिफारिश पर नेशनल असेंबली को भंग कर दिया है। इससे कुछ ही देर पहले नेशनल असेंबली के डिप्टी स्पीकर कासिम सूरी ने प्रधानमंत्री के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया था। खान ने संसद के निचले सदन, 342 सदस्यीय नेशनल असेंबली में प्रभावी तौर पर बहुमत खो दिया था।

'ओबामाकेयर' का दायरा बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं बाइडन

वाशिंगटन। पांच अप्रैल (एपी) पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा पिछली बार 20 जनवरी 2017 को व्हाइट हाउस में थे जब वह अपने उत्तराधिकारी डोनाल्ड ट्रंप को वहां छोड़ने गए थे। ट्रंप को ओबामा द्वारा शुरू की गई स्वास्थ्य देखभाल नीति जो 'ओबामाकेयर' के नाम से चर्चित थी का विरोधी माना जाता था। लेकिन ओबामा एक बार फिर व्हाइट हाउस पहुंचे और इस बार मौका कुछ ऐसा था जो उन्हें खुशी देने वाला था। अब अमेरिका के स्वास्थ्य देखभाल तंत्र के ताने-बाने का हिस्सा उनके द्वारा लागू वहनीय स्वास्थ्य देखभाल कानून के दायरे को मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं। बाइडन के नेतृत्व में स्वास्थ्य देखभाल कानून के तहत नामांकन कराने

वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। अधिक उदार करदाता सब्सिडी ने इससे जुड़ने के लिये लागत में कटौती की है हालांकि यह कटौती अस्थायी है। बाइडन और ओबामा कानून की 12वीं वर्षगांठ को याद कर रहे हैं। बाइडन 2010 में उपराष्ट्रपति थे। उन्होंने इसे 'बड़े (अनुपूरक) सौदे' के तौर पर याद किया।

बांग्लादेश में पुलिसकर्मी ने बिंदी लगाने वाली महिला प्रोफेसर पर किए भद्दे कमेंट, आरोपी गिरफ्तार

ढाकाः बांग्लादेश में एक निजी महाविद्यालय में पढ़ाने वाली महिला प्रोफेसर का बिंदी लगाने की वजह से उत्पीड़न करने के आरोपी पुलिस कांस्टेबल को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने यह जानकारी दी जानकारी के मुताबिक ढाका महानगर पुलिस (डीएमपी) ने बताया कि कांस्टेबल नजमुल तारीक पर प्रोफेसर लता समुदार का उत्पीड़न करने, गाली-गलौज करने और हमला करने का मामला दर्ज किया गया है। खबर के मुताबिक लता ढाका के तेजगांव कॉलेज में रंगमंच और मीडिया अध्ययन की प्रवक्ता हैं। डीएमपी के तेजगांव डिविजन के उपायुक्त बिप्लव कुमार सरकार ने बताया, ''कांस्टेबल का नाम नजमुल तारीक है। जांच में पाया गया कि वह घटना में संलिप्त है।' ढाका के पुलिस आयुक्त मोहम्मद शफीकुल

इस्लाम ने बताया कि कांस्टेबल के खिलाफ प्रशासनिक कार्रवाई की जाएगी जिसने बिंदी लगाने पर महिला प्रोफेसर का उत्पीड़न किया। महिला प्रोफेसर ने इससे पहले अपनी शिकायत में कहा कि गाली गलौज का विरोध करने पर 'वर्दीधारी ' द्वारा उनपर बाइक चढ़ाने की कोशिश की गई जिससे वह डरी हुई हैं। महिला ने बताया कि वह जल्दी से हट गई जिससे उनकी जान बची लेकिन सड़क पर गिरने से उन्हें चोट आई है। इस बीच, इस घटना को लेकर देश के कई हिस्सों में विरोध प्रदर्शन हो रहा है। कई संगठनों ने प्रदर्शन किया है और आरोपी पुलिस कर्मी को न्याय के कठघरे में लाने की मांग की है।

श्रीलंका संकटः राष्ट्रपति की सत्ता पर पकड़ हुई कमजोर, नियुक्ति के 24 घंटे के बीच नए वित्त मंत्री ने दिया इस्तीफा

कोलंबोः अब तक के सबसे बुरे आर्थिक संकट का सामना कर रहे श्रीलंका में राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे की सत्ता पर पकड़ कमजोर हो चुकी है। राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के नेतृत्व वाले श्रीलंका के सत्तारूढ़ गठबंधन की मुश्किलें तब और बढ़ गईं जब नव-नियुक्त वित्त मंत्री अली साबरी ने इस्तीफा दे दिया, वहीं पूर्व राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरीसेना के नेतृत्व वाले असंतुष्ट सांसदों ने देश के सबसे बड़े आर्थिक संकट को लेकर राष्ट्र व्यापी विरोध प्रदर्शनों की पृष्ठभूमि में सरकार छोड़ने की योजना बनाई।

राष्ट्रपति राजपक्षे ने अपने भाई बासिल राजपक्षे को बर्खास्त करने के बाद साबरी को नियुक्त किया था, जो सत्तारूढ़ श्रीलंका पोदुजाना पेरामुना (एसएलपीपी) गठबंधन के भीतर गुस्से के केंद्र में थे। राष्ट्रपति को लिखे एक पत्र में साबरी ने कहा कि उन्होंने एक अस्थायी उपाय के तहत यह पद संभाला है। साबरी ने पत्र में लिखा, 'हालांकि, बहुत विचार-विमर्श के बाद वर्तमान स्थिति को

मद्देनजर रखते हुए, मेरा विचार है कि महामहिम को उचित अंतरिम प्रबंध करने होंगे जिससे इस अभूतपूर्व संकट से नए, सक्रिय व असाधारण उपाय करने की जरूरत है जिनमें नए वित्त मंत्री को नियुक्त करना भी शामिल है।'

साबरी उन चार मंत्रियों में शामिल हैं जिन्हें राष्ट्रपति ने सोमवार को नियुक्त किया था। इससे एक दिन पहले उनके सभी मंत्रिमंडलीय सहयोगियों ने इस्तीफा दे दिया था। जब संसद बुलाई गई तो सरकार के कई सहयोगियों ने तटस्थ रहने का फैसला किया। राष्ट्रपति राजपक्षे द्वारा पिछले सप्ताह आपातकाल की घोषणा के बाद से यह पहला सत्र था। सत्तारूढ़ गठबंधन ने 2020 के आम चुनावों में 150 सीटें जीती थीं और विपक्ष के सदस्यों के पाला बदलने से उसकी संख्या में और बढ़ोतरी हुई थी हालांकि वह इनमें से कम से कम 41 सांसदों का समर्थन खोता हुआ दिखाई दे रहा है। अब ऐसा प्रतीत होता है कि 225 सदस्यीय संसद में साधारण बहुमत के लिए आवश्यक 113 सीटों से उसके पास पांच कम, 109 सीटें हैं। सरकार ने हालांकि दावा किया कि उसके पास साधारण बहुमत है। गौरतलब है कि श्रीलंका वर्तमान में इतिहास के सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। ईंधन, रसोई गैस के लिए लंबी लाइन, आवश्यक वस्तुओं की कम आपूर्ति और घंटों बिजली कटौती से जनता महीनों से परेशान है। पार्टी सूत्रों ने सोमवार को राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद कहा कि पूर्व राष्ट्रपति सिरीसेना की अगुवाई में श्रीलंका फ्रीडम पार्टी (एसएलएफपी) के असंतुष्ट सांसद सत्तारूढ़ एसएलपीपी का दामन छोड़ सकते हैं।

अमेरिका की मुश्किलें अनंतः सऊदी अरब और यूएई से टूटने के कगार पर है रिश्ता

वाशिंगटन। अमेरिका और दूसरे पश्चिमी देशों में कच्चे तेल की तेजी से बढ़ रही महंगाई से निपटने के लिए राष्ट्रपति जो बाइडन ने अमेरिका के स्ट्रेटेजिक रिजर्व से अभूतपूर्व मात्रा में तेल जारी करने का फैसला किया है। लेकिन जानकारों ने इसे बाइडन प्रशासन की कूटनीतिक नाकामी का एक और संकेत माना है। उनके मुताबिक अमेरिका अपने दो खास सहयोगी देशों- सऊदी अरब और यूनाइटेड अरब अमीरात (यूएई) को तेल का अधिक उत्पादन करने के लिए राजी करने में नाकाम रहा। उसके बाद बाइडन को अपने भंडार में मौजूद तेल को बाजार में लाने का फैसला करना पड़ा।

पिछले कई हफ्तों से ये खबर चर्चित रही है कि सऊदी अरब और यूएई ने तेल का उत्पादन बढ़ाने से साफ इनकार कर दिया है। ब्रिटिश अखबार द गार्जियन के पश्चिम एशिया संवाददाता मार्टिन चुलोव ने अपने एक विश्लेषण में लिखा है- 'यूक्रेन में पांच हफ्तों से चल रहे युद्ध के कारण दुनिया के कई हिस्सों में तनाव पैदा हुआ है। लेकिन मध्य पूर्व (पश्चिम एशिया) में क्षेत्रीय व्यवस्था जितने दबाव में है, उतना और कहीं नहीं है। इस क्षेत्र में अमेरिका के दो सबसे बड़े सहयोगी देश अब अमेरिका के साथ अपने संबंधों की बुनियाद पर सवाल उठा रहे हैं।' यूक्रेन युद्ध शुरू होने के कुछ दिन बाद ही राष्ट्रपति बाइडन ने सऊदी अरब और यूएई के शासकों से संपर्क करने की कोशिश की थी। लेकिन उन दोनों ने उनसे बात करने से इनकार कर दिया था। तब इसे एक अभूतपूर्व घटना बताया गया था। उसके बाद ऐसी खबरें आती रही हैं कि रूस के लोग बड़े पैमाने पर यूएई में अपना पैसा लगा रहे हैं। इसे भी अमेरिका के लिए एक झटका समझा गया है, जो इस समय रूस को अलग-थलग करने में जुटा हुआ है। एक पश्चिमी कूटनीतिज्ञ ने सऊदी कूटनीतिज्ञों से हुई अपनी बातचीत के बारे में द गार्जियन को बताया।

इमरान की विदेशी साजिश वाली थ्योरी पर पाक सेना को भी नहीं भरोसा, अमेरिका की तारीफ की, कहा- कोई सबूत ही नहीं

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में इन दिनों सियासी उथल-पुथल थमने का नाम नहीं ले रही है। इन हालात में पाकिस्तान सरकार और सेना के बीच मतभेद अब खुलकर जगजाहिर हो गए हैं। प्रधानमंत्री इमरान खान इस अस्थिरता के पीछे जहां विदेशी ताकत यानि अमेरिका को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं वहीं पाकिस्तानी सेना के जनरल कमर बाजवा जमकर अमेरिका की तारीफ कर रहे हैं। बाजवा ने अमेरिका की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा कि अमेरिका से हमारे अच्छे संबंध हैं। जनरल है । पाकिस्तान की सेना ने प्रधानमंत्री इमरान खान के उस बयान का खंडन किया है, जिसमें

उन्होंने अमेरिका पर अपनी सरकार को गिराने की साजिश रचने का आरोप लगाया था। मीडिया में प्रकाशित एक खबर के अनुसार, सेना की ओर से कहा गया है कि देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का कोई साक्ष्य मौजूद नहीं है। इमरान ने उनकी सरकार को गिराने के लिए लिखे गए 'धमकी भरे एक पत्र' पर चर्चा के वास्ते 27 मार्च को राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (एनएससी) की एक बैठक की अध्यक्षता की थी। बैठक के बाद जारी किए गए एक बयान में कहा गया था कि उक्त पत्र में प्रयोग की गई भाषा अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक संवाद के अनुरूप नहीं थी और यह पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप था। इसके बाद एनएससी ने आपत्ति जताते हुए अमेरिका को एक पत्र जारी किया था। इमरान ने कहा कि सेना के उच्च अधिकारियों ने पत्र का समर्थन किया था और उसमें जो धमकी दी गई थी, वह असली थी। बाद में नेशनल असेंबली के उपाध्यक्ष कासिम सूरी ने अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया था, जिससे संवैधानिक संकट पैदा हो गया। आधिकारिक सूत्रों ने 'द एक्सप्रेस ट्रिब्यून' से कहा कि सैन्य नेतृत्व के बारे में गलत छवि बनाई जा रही है। एक सूत्र ने कहा कि प्रधानमंत्री बैठक के विवरण को सार्वजनिक कर सकते हैं, क्योंकि एनएससी का बयान केवल मीडिया के लिए था। सूत्रों ने कहा, ÷क्या एनएससी की बैठक का कोई विवरण मौजूद है? क्या बैठक में शामिल सभी लोगों ने विवरण पर हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने कहा कि बैठक के विवरण को आधिकारिक दस्तावेज तभी माना जाता है, जब उसमें शामिल एनएससी के सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर किए हों। इससे पता चलता है कि सैन्य नेतृत्व ने बैठक के विवरण पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। सूत्रों के अनुसार, अमेरिका ने सरकार को कोई पत्र नहीं लिखा था और यह अमेरिका में पाकिस्तान के राजदूत मसूद खान की अमेरिकी अधिकारियों के साथ हुई बैठक के बाद की गई समीक्षा थी। उन्होंने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव और राजनयिक पत्र के बीच संबंध का कोई साक्ष्य मौजूद नहीं है।

अफगानिस्तान के जावजान प्रांत में टीबी के 1100 से अधिक मामले आए सामने

जावजानः तालिबान राज के बाद गंभीर आर्थिक व मानवीय संकट से जूझ रहे अफगानिस्तान के जावजान प्रांत में टीबी के 1100 से अधिक मामले सामने आए हैं। चिकित्सक विशेषज्ञ अब्दुल गफोर सबौरी ने कहा कि पिछले साल उत्तरी जज्जान प्रांत में तपेदिक रोग के 1,100 से अधिक मामलों की पुष्टि हुई थी। समाचार एजेंसीके अनुसार, सबौरी ने कहा, 2021 में जावजान प्रांत में तपेदिक के कुल 1,138 सकारात्मक मामले दर्ज किए गए थे और प्रांत में स्वास्थ्य अधिकारी इस बीमारी की जांच और नियंत्रण के लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे।' हालांकि अधिकारी ने प्रांत में बीमारी से किसी भी मौत या अफगानिस्तान में तपेदिक से पीड़ित लोगों की संख्या के बारे में किसी भी आंकड़े का उल्लेख नहीं किया। खबर के हवाले से अधिकारी ने कहा कि बीमारी से निपटने के लिए प्रांत में बीमारी के लिए कुल 11 निदान और उपचार केंद्र संचालित हैं। तपेदिक रोग संक्रामक और इलाज योग्य है, चिकित्सक ने कहा, बीमारी के अनुबंध का मुख्य कारण गरीबी, कुपोषण और बीमारी के बारे में जागरूकता की कमी है।

आसान होगी भारत-जापान यात्रा, भारतीय कोविड टीका कोवैक्सीन को मिली जापानी मान्यता

टोक्यो। जापान और भारत के बीच यात्रा अब आसान हो जाएगी। जापान सरकार ने भारत में बने कोविड टीका कोवैक्सीन को मान्यता प्रदान कर दी है। इस पर अमल 10 अप्रैल से शुरू हो जाएगा।

कोरोना पूरी दुनिया के लिए संकट का सबब लेकर आया था। ऐसे में कोरोना रोधी टीकों के बिना यात्रा पर पाबंदी लगी हुई थी। जापान जैसे कई देशों ने कुछ अंतरराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा विकसित टीके लगवाने वाले लोगों को ही अपने देश की यात्रा की अनुमति दे रखी थी। अब जापान ने भारत में बने कोरोनारोधी टीके कोवैक्सीन को भी अपने देश की कोविड-19 रोधी मान्यता प्राप्त

टीकों की यात्रा अनुमति सूचा का हिस्सा बना लिया है।

भारत में कोवैक्सीन का निर्माण करने वाली कंपनी भारत बायोटेक ने भी इस फैसले का स्वागत करते हुए ट्वीट किया है। भारत बायोटेक की ओर से ट्वीट किया गया कि जापान सरकार ने भारत बायोटेक के कोवैक्सीन को मान्यता प्राप्त टीकों की सूची में शामिल किया है। यह अनुमति रविवार यानी 10 अप्रैल 2022 से प्रभावी होगी। इससे भारत और जापान के बीच यात्रा की सुविधा सुगम होगी। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया की सरकार भी भारत बायोटेक के इस टीके कोवैक्सीन को यात्रा के लिए मंजूरी दे चुकी है। कोवैक्सीन टीका लगवाने वाले लोगों के लिए ऑस्ट्रेलिया की यात्रा भी सुगम हो चुकी है। भारत बायोटेक का दावा है कि कोवैक्सीन कोरोना रोधी टीकों के मामले में अंतरराष्ट्रीय मापदंडों पर खरी उतरती है। यही कारण है कि भारतीय टीके को लगातार अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिल रही है।

अखड भारत सदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506